पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

University of Patanjali, Haridwar

PROGRAMME PROJECT REPORT (PPR)

B.A. दर्शन

B.A. Philosophy

Open and Distance Learning Programme

(शैक्षणिक सत्र 2026–2027 से प्रभावी)

(Effective from Academic Session 2026–2027)

Accredited with Grade A+ by NAAC

पतंजलि विश्वविद्यालय,(हरिद्वार)

PROGRAMME PROJECT REPORT (PPR)

B.A. दर्शन

Open and Distance Learning Programme

(शैक्षणिक सत्र 2026-2027 से प्रभावी)

Contents

1.विश्वविद्यालय परिचय 4

2.विश्वविद्यालय की दृष्टि (Vision) 4

3.विश्वविद्यालय का लक्ष्य (Mission) 4

4. कार्यक्रम का परिचय B.A. दर्शन 5

5.कार्यक्रम की आवश्यकता एवं महत्व 5

6. कार्यक्रम के शैक्षिक उद्देश्य (Programme Educational Objectives) 6

7.कार्यक्रम मिशन (Programme Mission) 6

8.कार्यक्रम परिणाम (Programme Outcomes) 7

9.विश्वविद्यालय मिशन से कार्यक्रम की प्रासंगिकता 7

10.लक्षित शिक्षार्थी (Target Learners) 8

11.कौशल विकास एवं दक्षता निर्माण 8

12.Instructional Design (शिक्षण-अधिगम प्रणाली) 9

13.कार्यक्रम संरचना 10

14.मूल्यांकन प्रणाली 12

15.रोजगार एवं उच्च शिक्षा के अवसर 13

16.प्रवेश प्रक्रिया 14

17. शुल्क संरचना (Indicative) 16

18.गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली 16

19.शैक्षणिक संसाधन (Faculty Resources) 16

20.अवसंरचना सहयोग (Infrastructure Support) 17

21.प्रयोगशाला सहयोग एवं पुस्तकालय संसाधनों की आवश्यकता 18

22.कार्यक्रम की लागत का अनुमान एवं प्रावधान 18

1.विश्वविद्यालय परिचय

पतंजलि विश्वविद्यालय भारत की अग्रणी उच्च शिक्षण संस्थाओं में से एक है, जो प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा तथा आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा के समन्वय हेतु समर्पित है। यह विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड राज्य के पवित्र नगर हरिद्वार के समीप स्थित है, जहाँ आध्यात्मिकता, संस्कृति एवं शिक्षा का अद्भुत वातावरण विद्यमान है। विश्वविद्यालय का नाम महान योगद्रष्टा महर्षि पतंजलि के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने योगसूत्रों के माध्यम से मानवता को चित्तशुद्धि, आत्मविकास और मोक्ष का मार्ग प्रदान किया।

विश्वविद्यालय का प्रमुख उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा जैसे योग, आयुर्वेद, संस्कृत, दर्शन, वेद, उपनिषद् तथा शास्त्रीय विषयों को आधुनिक पद्धति से विद्यार्थियों तक पहुँचाना है। इसके साथ-साथ विज्ञान, मानविकी, सामाजिक विज्ञान एवं व्यावसायिक विषयों में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाती है।

विश्वविद्यालय शिक्षण, शोध, प्रशिक्षण, चरित्र निर्माण और राष्ट्र निर्माण के समन्वित दृष्टिकोण पर कार्य करता है। Open and Distance Learning (ODL) प्रणाली के माध्यम से यह संस्था उन विद्यार्थियों तक शिक्षा पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध है जो किसी कारणवश नियमित शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते।

2.विश्वविद्यालय की दृष्टि (Vision)

- विश्वबन्धुत्व की भावना के साथ प्राचीन वैदिक ज्ञान एवं नूतन वैज्ञानिक अनुसन्धान के समायोजन से वैश्विक चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करना।
- प्राचीन भारतीय संस्कृति सार्वकालिक, सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को स्वयं में समाहित किए हुए है, अतः भारतीय संस्कृति व ज्ञान परम्परा को। पुनः प्रतिष्ठा दिलाने एवं भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने के उद्देश्य से स्वस्थ, सुयोग्य व चरित्रवान नागरिकों का निर्माण करना।

3.विश्वविद्यालय का लक्ष्य (Mission)

- योग, आयुर्वेद एवं संस्कृत का शिक्षण की मुख्यधारा में प्रतिष्ठापन
- प्राचीन वैदिक ज्ञान का आधुनिक विज्ञान के साथ एकीकरण
- विज्ञान एवं आध्यात्मिकता के सम्मिश्रण से शान्तिपूर्ण जीवनशैली का मार्गदर्शन
- प्राचीन ज्ञान एवं संस्कृति का संरक्षण व संवर्धन

4. कार्यक्रम का परिचय B.A. दर्शन

B.A. दर्शनशास्त्र (भारतीय दर्शन) तीन वर्षीय स्नातक कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय दार्शनिक परंपराओं, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, अध्यात्म, तुलनात्मक दर्शन एवं आधुनिक जीवन में दर्शन की उपयोगिता का व्यवस्थित ज्ञान प्रदान करना है।

भारतीय दर्शन विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध दार्शनिक परंपराओं में से एक है। यह केवल बौद्धिक चिंतन तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन जीने की कला, दुःख से मुक्ति, आत्मबोध और सामाजिक संतुलन का मार्ग भी प्रस्तुत करता है।

इस कार्यक्रम में न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा, वेदान्त, बौद्ध, जैन और चार्वाक जैसे विविध दर्शन प्रणालियों का अध्ययन कराया जाएगा। विद्यार्थी यह समझ सकेंगे कि भारतीय ऋषियों ने ज्ञान, आत्मा, ईश्वर, जगत, कर्म और मोक्ष जैसे गूढ़ विषयों पर किस प्रकार गहन चिंतन किया।

यह कार्यक्रम आधुनिक विद्यार्थियों को तर्कशीलता, नैतिकता, आत्मानुशासन और नेतृत्व क्षमता प्रदान करने में सहायक होगा।

5.कार्यक्रम की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि सही विचार, नैतिक जीवन और मानसिक संतुलन भी होना चाहिए। दर्शनशास्त्र इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति करता है।

भारतीय दर्शन विद्यार्थियों को सिखाता है कि जीवन में समस्याएँ क्यों उत्पन्न होती हैं और उनका समाधान कैसे किया जा सकता है। यह व्यक्ति को विवेक, धैर्य, संयम और आत्मनिरीक्षण की शिक्षा देता है।

सा विद्या या विमुक्तये

अर्थात् वह विद्या ही वास्तविक है जो मनुष्य को बंधनों से मुक्त करे।

आज के तनावपूर्ण और प्रतिस्पर्धात्मक जीवन में भारतीय दर्शन अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि यह मानसिक शांति, मूल्यपरक जीवन और सामाजिक समरसता का मार्ग प्रस्तुत करता है।

6. कार्यक्रम के शैक्षिक उद्देश्य (Programme Educational Objectives)

शिक्षा सभी को सरलता से उपलब्ध हो सके, दूर दराज के गांवों और नगर से कटे हुए क्षेत्रों तक शिक्षा का विस्तार हो सके, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए दूरस्थ शिक्षण कार्य किया जाना आवश्यक हैं। पतंजलि विश्विद्यालय का मुख्य प्रयोजन ODL द्वारा भौगोलिक और आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों तक शिक्षा का विस्तार करना है

इस कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- PEO1 - दर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों की समझ ।
- PEO2 - तर्कशक्ति का विकास ।
- PEO3 - नैतिक, सामाजिक एवं वैश्विक उत्थान में दर्शन का योगदान ।
- PEO4 - वैदिक एवं वैदिकेतर विचारधाराओं के अन्तर का ज्ञान।
- PEO5 - व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्रोत्थान के लिए जिम्मेदारी (Responsibility) एवं स्वामित्व (Ownership) का भाव विकसित करना।
- PEO6 - Philosophy को केवल जानना ही नहीं अपितु जीना।
- PEO7 - वक्तृत्व, नेतृत्व एवं दिव्य Domination का भाव विकसित करना।

7.कार्यक्रम मिशन (Programme Mission)

- • भारतीय दर्शन, वैदिक ज्ञान एवं सांस्कृतिक परम्पराओं पर आधारित गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान करना।
- • विद्यार्थियों में तर्कशील चिंतन, समालोचनात्मक दृष्टि एवं दार्शनिक विश्लेषण क्षमता का विकास करना।
- • नैतिक मूल्यों, आत्मानुशासन, चरित्र निर्माण एवं उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करना।
- • शास्त्रीय एवं समकालीन दार्शनिक विचारधाराओं के समन्वित अध्ययन को प्रोत्साहित करना।
- • शोध, नवाचार एवं अकादमिक उत्कृष्टता के लिए प्रेरक शैक्षिक वातावरण उपलब्ध कराना।
- • भारतीय ज्ञान परम्परा के संरक्षण, संवर्धन एवं वैश्विक प्रसार में योगदान देना।
- • विद्यार्थियों को समाज, राष्ट्र एवं मानवता के प्रति संवेदनशील, जागरूक एवं नेतृत्वक्षम नागरिक के रूप में विकसित करना।

- • दर्शनशास्त्र के माध्यम से जीवन मूल्यों, मानसिक संतुलन तथा आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करना।
- • मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा (ODL) प्रणाली के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सभी वर्गों तक सुलभ बनाना।
- • आजीवन अधिगम (Lifelong Learning) की भावना को प्रोत्साहित करते हुए सतत् ज्ञानार्जन के अवसर उपलब्ध कराना।

8.कार्यक्रम परिणाम (Programme Outcomes)

इस कार्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी निम्न योग्यताएँ प्राप्त करेगा:

- PO1 - दार्शनिक धाराओं का तुलनात्मक अध्ययन।
- PO2 - तार्किक विश्लेषण.
- PO3 - प्राचीन (Classical) और अर्वाचीन (Modern) दार्शनिकों का परिचय ।
- PO4 - स्वतन्त्र विचारधारा और आलोचनात्मक चिन्तन
- PO5 - समाज, संस्कृति और धर्म का दार्शनिक दृष्टिकोण ।
- **PO6 -** व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्र निर्माण के लिए सामर्थ्य एवं योगदान ।

9.विश्वविद्यालय मिशन से कार्यक्रम की प्रासंगिकता

यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के मिशन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। विश्वविद्यालय भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुत्थान हेतु समर्पित है, और दर्शनशास्त्र उसका प्रमुख आधार है।

दर्शन का अध्ययन विद्यार्थियों को केवल ज्ञान ही नहीं देता, बल्कि उन्हें जीवन के उच्च आदर्शों से भी जोड़ता है। यह कार्यक्रम योग, संस्कृत, वेद एवं भारतीय संस्कृति के अध्ययन को भी समर्थन देता है।

इस प्रकार यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के उस उद्देश्य को पूर्ण करता है जिसमें शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की कल्पना की गई है।

10.लक्षित शिक्षार्थी (Target Learners)

यह कार्यक्रम उन सभी शिक्षार्थियों के लिए उपयोगी है जो भारतीय ज्ञान परंपरा, दर्शन, संस्कृति और मूल्यपरक शिक्षा में रुचि रखते हैं।

विशेष रूप से यह निम्न वर्गों के लिए उपयुक्त है:

- 12वीं उत्तीर्ण विद्यार्थी
- प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थी
- कार्यरत कर्मचारी
- गृहिणियाँ
- संस्कृत एवं शास्त्र अध्ययन के इच्छुक विद्यार्थी
- आध्यात्मिक अभिरुचि वाले व्यक्ति
- आजीवन शिक्षार्थी

11.कौशल विकास एवं दक्षता निर्माण

इस कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में निम्न दक्षताओं का विकास होगा:

- आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking)
- तार्किक विश्लेषण (Logical Analysis)
- संप्रेषण कौशल (Communication Skills)
- नैतिक निर्णय क्षमता
- लेखन एवं प्रस्तुतीकरण कौशल
- नेतृत्व, वक्तृत्व एवं अतिसूक्ष्म विषयों के बोध की क्षमता
- आत्मअनुशासन एवं आत्मविश्वास

ये कौशल विद्यार्थियों को व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में सफल बनाएँगे।

12.Instructional Design (शिक्षण-अधिगम प्रणाली)

कार्यक्रम को ODL mode के अनुरूप इस प्रकार तैयार किया गया है कि विद्यार्थी घर बैठे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकें।

अध्ययन सामग्री- विद्यार्थियों को मुद्रित एवं डिजिटल Self Learning Material (SLM) उपलब्ध कराया जाएगा। सामग्री सरल भाषा, उदाहरणों और चित्रों सहित होगी।

ऑनलाइन संसाधन

- Video Lectures
- Live and Recorded Classes
- PPT Notes
- e-Books
- LMS Portal

Academic Support

- Online Doubt Clearing Sessions
- Email Support
- PCP (Personal Contact Programme)
- Faculty Guidance Sessions

इस प्रकार कार्यक्रम स्व-अध्ययन एवं मार्गदर्शित अध्ययन दोनों का संतुलित मॉडल प्रस्तुत करता है।

13.कार्यक्रम संरचना

यह कार्यक्रम तीन वर्ष की अवधि का होगा तथा छह सेमेस्टर में विभाजित रहेगा। प्रत्येक सेमेस्टर में मूल विषय, कौशल आधारित विषय तथा सहायक विषय सम्मिलित होंगे।

कार्यक्रम क्रेडिट आधारित प्रणाली पर आधारित होगा, जिससे विद्यार्थी व्यवस्थित रूप से अध्ययन कर सकें।

Semester I

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit	CA	SEE	Subject Total
1	Discipline Specific Major	BDPHMJ-101	योगदर्शनम्	5	25	75	100
2	Discipline Specific Minor	BDPHMN-102	वैदिकेत्तरदर्शनम्	4	25	75	100
3	Inter Disciplinary	BDPHID-103(1)	संस्कृतसाहित्यम् - I	3	25	75	100
		BDPHID-103(2)	प्राचीन भारत का इतिहास - I (प्रारम्भ से मौर्यकाल तक)				
4	Ability Enhancement	BDPHAE-104	Communicative English Basic	2	15	35	50
5	Skill Enhancement/ Internship	BDPHSE-105(1)	योग चिकित्सा – I	3	25	75	100
		BDPHSE-105(2)	गायन एवं वादन का प्रारम्भिक बोधः				
6	Value Added	BDPHVA-106	सनातन संस्कृति बोध –I	3	25	75	100
				Total - 20			

Semester II

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit	CA	SEE	Subject Total
1	Discipline Specific Major	BDPHMJ-201	न्यायदर्शनम् – I	5	25	75	100
2	Discipline Specific Minor	BDPHMN-202	पाश्चात्यदर्शनम्	4	25	75	100
3	Inter Disciplinary	BDPHID-203(1)	संस्कृतसाहित्यम् – II	3	25	75	100
		BDPHID-203(2)	प्राचीन भारत का इतिहास – II				
4	Ability Enhancement	BDPHAE-204	Advanced Communicative English	2	15	35	50

5	Skill Enhancement/ Internship	BDPHSE-205(1)	योग चिकित्सा – II	3	25	75	100
		BDPHSE-205(2)	गायन एवं वादन का मध्य स्तरीय बोध				
6	Value Added	BDPHVA-206(1)	सनातन संस्कृति बोध – II	3	25	75	100
				Total - 20			

Semester III

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit	CA	SEE	Subject Total
1	Discipline Specific Major-1	BDPHMJ-301	न्यायदर्शनम् – II	4	25	75	100
2	Discipline Specific Major-2	BDPHMJ-302	न्यायदर्शनम् – III	4	25	75	100
3	Discipline Specific Minor	BDPHMN-303	भाषाविज्ञानं मनोविज्ञानं च	4	25	75	100
4	Inter Disciplinary	BDPHID-304(1)	संस्कृतसाहित्यम् – III	3	25	75	50
5		BDPHID-304(2)	स्वर्णकाल का इतिहास				
7	Ability Enhancement	BDPHAE-305	सरल मानक संस्कृतम्	2	15	35	50
8	Skill Enhancement/ Internship	BDPHSE-306(1)	सस्वर वेदपाठ	3	25	75	100
9		BDPHSE-306(2)	यज्ञविज्ञानम्				
				Total - 20			

Semester –IV

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit	CA	SEE	Subject Total
1	Discipline Specific Major-1	BDPHMJ-401	वैशेषिक दर्शनम् – I	5	25	75	100
2	Discipline Specific Major-2	BDPHMJ-402	साङ्ख्यदर्शनम् – I	5	25	75	100
3	Discipline Specific Major-3	BDPHMJ-403	साङ्ख्यदर्शनम् – II	4	25	75	100
4	Discipline Specific Minor-1	BDPHMN-404	संस्कृतव्याकरण	4	25	75	100
5	Ability Enhanceme	BDPHAE-405	Introduction to journalism and	2	15	35	50

	nt		mass communication				
				Total - 20			

Semester -V

S.No.	**Course Type**	**Course Code**	**Course Title**	**Credit**	**CA**	**SEE**	**Subject Total**
1	Discipline Specific Major-1	BDPHMJ-501	वेदान्त दर्शन पूर्वार्ध	4	25	75	100
2	Discipline Specific Major-2	BDPHMJ-502	वेदान्त दर्शन उत्तरार्ध	4	25	75	100
3	Discipline Specific Major-3	BDPHMJ-503	तर्कसंग्रह एवं वैशेषिक दर्शन उत्तरार्ध	4	25	75	100
4	Discipline Specific Minor	BDPHMN-504	वैदिक साहित्य -I	4	25	75	100
5	Internship	BDPHSE-505	योग आयुर्वेद प्राकृतिक चिकित्सा प्रशिक्षण	4	25	75	100
				Total - 20			

Semester - VI

S.No.	**Course Type**	**Course Code**	**Course Title**	**Credit**	**CA**	**SEE**	**Subject Total**
1	Discipline Specific Major-1	BDPHMJ-601	मीमांसा ज्योतिष्यपरिचयश्च	4	25	75	100
2	Discipline Specific Major-2	BDPHMJ-602	भारतीय दर्शनों की मीमांसा एवं इतिहास	4	25	75	100
3	Discipline Specific Major-3	BDPHMJ-603	सांख्यकारिका	4	25	75	100
4	Discipline Specific Major-4	BDPHMJ-604	बुद्धचरितम्	4	25	75	100
5	Discipline Specific Minor-2	BDPHMN-605	लघु शोध प्रबन्ध	4	25	75	100
				Total - 20			

14.मूल्यांकन प्रणाली

विद्यार्थियों का मूल्यांकन निरंतर एवं अंतिम परीक्षा दोनों के आधार पर किया जाएगा।

Continuous Assessment – 25%

- Assignments

- Internal Test
- Quiz
- Seminar / Presentation

Semester End Examination – 75%

सेमेस्टर के अंत में लिखित परीक्षा आयोजित की जाएगी, जिसमें दीर्घ एवं लघु उत्तरीय प्रश्न होंगे।

Section	Questions	Marks
A	3/5 Long Answer	45
B	6/7 Short Answer	30
Total		75

इस प्रणाली से विद्यार्थियों की सतत प्रगति एवं विषय ज्ञान दोनों का मूल्यांकन संभव होगा।

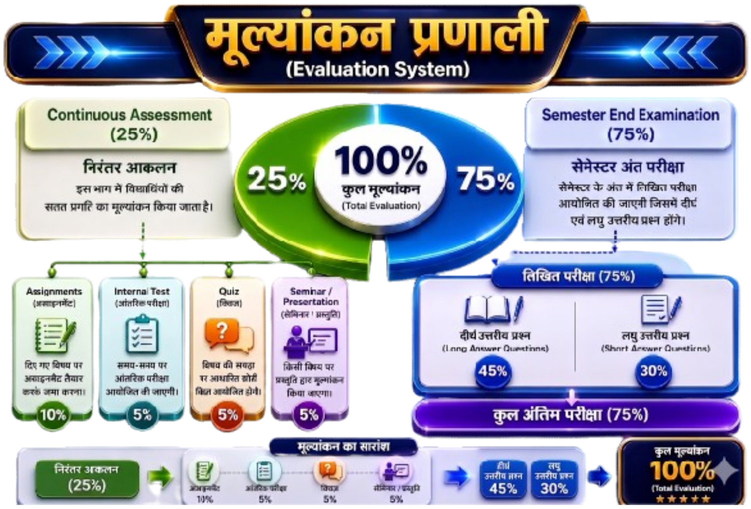

15.रोजगार एवं उच्च शिक्षा के अवसर

B.A. दर्शनशास्त्र कार्यक्रम के पश्चात विद्यार्थी निम्न क्षेत्रों में अवसर प्राप्त कर सकते हैं:

- M.A. Philosophy
- M.A. Sanskrit

- B.Ed.
- UPSC / State PCS
- UGC NET (higher studies later)
- Teaching Field
- Content Writing
- Spiritual Counselling
- Civil Services
- Research Institutions

16.प्रवेश प्रक्रिया

बी.ए. दर्शनशास्त्र कार्यक्रम में प्रवेश प्रक्रिया को सरल, पारदर्शी एवं छात्र-केंद्रित बनाया गया है, ताकि विभिन्न पृष्ठभूमि के अभ्यर्थी सहजता से नामांकन कर सकें। यह प्रक्रिया मुख्यतः चार चरणों—ऑनलाइन आवेदन (Online Form), दस्तावेज़ सत्यापन (Document Verification), शुल्क भुगतान (Fee Payment) तथा नामांकन की पुष्टि (Enrollment Confirmation)—में पूर्ण की जाती है।

- प्रथम चरण में अभ्यर्थी को विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध ऑनलाइन आवेदन प्रपत्र (Online Form) को सावधानीपूर्वक भरना होता है। इस प्रपत्र में व्यक्तिगत विवरण (जैसे नाम, जन्मतिथि, संपर्क जानकारी), शैक्षणिक योग्यता, श्रेणी (यदि लागू हो) तथा वांछित कार्यक्रम का चयन करना होता है। अभ्यर्थी को यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि सभी प्रविष्टियाँ सही एवं प्रमाणिक हों, क्योंकि आगे की प्रक्रिया इन्हीं सूचनाओं के आधार पर संचालित होती है। साथ ही, आवश्यक दस्तावेज़ों की स्कैन प्रति भी अपलोड करनी होती है।
- द्वितीय चरण में विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज़ों का सत्यापन (Document Verification) किया जाता है। इसमें अभ्यर्थी की शैक्षणिक योग्यता (जैसे 12वीं की अंकतालिका), पहचान प्रमाण, जन्मतिथि प्रमाण तथा अन्य आवश्यक प्रमाण-पत्रों की जांच की जाती है। यह सत्यापन प्रक्रिया ऑनलाइन माध्यम से अथवा आवश्यकता अनुसार ऑफलाइन भी की जा सकती है। सत्यापन का उद्देश्य अभ्यर्थी द्वारा प्रस्तुत जानकारी की प्रामाणिकता सुनिश्चित करना होता है, जिससे प्रवेश प्रक्रिया निष्पक्ष एवं विश्वसनीय बनी रहे।
- तृतीय चरण में अभ्यर्थी को निर्धारित शुल्क (Fee Payment) का भुगतान करना होता है। विश्वविद्यालय विभिन्न डिजिटल माध्यमों—जैसे नेट बैंकिंग, डेबिट/क्रेडिट कार्ड या अन्य ऑनलाइन

भुगतान प्रणालियों—के माध्यम से शुल्क जमा करने की सुविधा प्रदान करता है। शुल्क का भुगतान निर्धारित समय-सीमा के भीतर करना अनिवार्य होता है, अन्यथा आवेदन निरस्त हो सकता है। भुगतान के पश्चात अभ्यर्थी को रसीद (Payment Receipt) प्राप्त होती है, जिसे भविष्य के संदर्भ हेतु सुरक्षित रखना आवश्यक है।

- चतुर्थ एवं अंतिम चरण में विश्वविद्यालय द्वारा नामांकन की पुष्टि (Enrollment Confirmation) की जाती है। सभी औपचारिकताओं के पूर्ण होने तथा शुल्क के सफल सत्यापन के उपरांत अभ्यर्थी को औपचारिक रूप से कार्यक्रम में प्रवेश प्रदान कर दिया जाता है। इसके साथ ही, अभ्यर्थी को नामांकन संख्या (Enrollment Number) एवं लॉगिन विवरण (Login Credentials) प्रदान किए जाते हैं, जिनके माध्यम से वह लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) पर अध्ययन सामग्री, कक्षाएँ, असाइनमेंट एवं अन्य शैक्षणिक संसाधनों का उपयोग कर सकता है।
- इस प्रकार, यह सुव्यवस्थित एवं चरणबद्ध प्रवेश प्रक्रिया विद्यार्थियों के लिए सहज, सुरक्षित एवं पारदर्शी अनुभव सुनिश्चित करती है तथा उन्हें बिना किसी बाधा के अपने शैक्षणिक सफर की सफल शुरुआत करने में सहायक सिद्ध होती है।

17. शुल्क संरचना (Indicative)

मद	राशि (₹)
Registration Fee	1000
Tuition Per Semester	8000
Other Fee	7000
First Semester	1600
Full Course Approx	56000

18.गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली

विश्वविद्यालय इस कार्यक्रम की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु निम्न व्यवस्थाएँ करेगा:

- UGC-DEB मानकों के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण
- विशेषज्ञ समिति द्वारा समय-समय पर पाठ्यक्रम संशोधन
- Faculty Development Programmes
- Student Feedback System
- Academic Audit
- PCP Quality Review

19.शैक्षणिक संसाधन (Faculty Resources)

बी.ए. दर्शनशास्त्र कार्यक्रम उच्च कोटि के विद्वान एवं अनुभवी प्राध्यापकों के मार्गदर्शन में संचालित होता है, जो भारतीय दर्शन (विशेषतः वेदान्त, न्याय, मीमांसा, बौद्ध एवं जैन दर्शन), पाश्चात्य दर्शन, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र तथा तत्त्वमीमांसा जैसे प्रमुख क्षेत्रों में विशिष्ट दक्षता रखते हैं। ये प्राध्यापक केवल सैद्धान्तिक ज्ञान तक सीमित न रहकर, दार्शनिक चिंतन की जीवंत परम्परा को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते हैं, जिससे विद्यार्थी गहन विश्लेषण, तार्किकता एवं समालोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकें।

कार्यक्रम में ग्रंथ-केंद्रित अध्ययन (Textual Study Approach) को विशेष महत्व दिया जाता है, जिसके अंतर्गत मूल संस्कृत ग्रंथों एवं उनके भाष्यों का अध्ययन कराया जाता है। साथ ही, छात्रों को दार्शनिक तर्क-

वितर्क (Dialectical Method), विमर्श (Debate), एवं आलोचनात्मक लेखन (Critical Writing) के माध्यम से सक्रिय अधिगम (Active Learning) के लिए प्रेरित किया जाता है।

प्रत्येक विद्यार्थी को अनुभवी मेंटर द्वारा व्यक्तिगत शैक्षणिक मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है, जिससे वे शोध-प्रवृत्ति, स्वतंत्र चिंतन एवं विषय की गहराई को आत्मसात कर सकें। शोध परियोजनाओं, असाइनमेंट्स एवं प्रस्तुतीकरणों के माध्यम से विद्यार्थियों को अकादमिक लेखन एवं अनुसंधान पद्धति का व्यावहारिक अनुभव भी प्रदान किया जाता है। यह समग्र शैक्षणिक ढांचा विद्यार्थियों को शिक्षण, अनुसंधान, सिविल सेवा, लेखन तथा बहुविषयक (interdisciplinary) क्षेत्रों में उत्कृष्ट करियर हेतु सक्षम बनाता है।

20.अवसंरचना सहयोग (Infrastructure Support)

पतंजलि विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की गई सुदृढ़ एवं आधुनिक अवसंरचना, ओपन एवं डिस्टेंस लर्निंग (ODL) प्रणाली के अंतर्गत दर्शनशास्त्र के अध्ययन को अत्यंत प्रभावी एवं सुलभ बनाती है। विश्वविद्यालय का डिजिटल शिक्षण पारितंत्र (Digital Learning Ecosystem) विद्यार्थियों को स्थान एवं समय की सीमाओं से परे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करता है।

इस अंतर्गत उच्च गुणवत्ता वाले वीडियो व्याख्यान, ई-पुस्तकें, प्राचीन एवं आधुनिक दार्शनिक ग्रंथ, इंटरैक्टिव अध्ययन सामग्री तथा स्व-मूल्यांकन (Self-assessment) उपकरण उपलब्ध कराए जाते हैं, जिससे विद्यार्थी अपनी गति से गहन अध्ययन कर सकते हैं। लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) के माध्यम से पाठ्यक्रम संचालन, असाइनमेंट सबमिशन, ऑनलाइन परीक्षा एवं प्राध्यापकों के साथ संवाद सुचारु रूप से संचालित होता है।

दार्शनिक विमर्श को सशक्त बनाने हेतु नियमित रूप से ऑनलाइन संगोष्ठियाँ, वेबिनार, एवं विचार-चर्चा सत्र आयोजित किए जाते हैं, जिनमें समकालीन विषयों तथा शास्त्रीय सिद्धांतों पर गहन चर्चा होती है। यह विद्यार्थियों में संवादात्मक एवं विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास करता है।

विश्वविद्यालय का डिजिटल पुस्तकालय (Digital Library) दर्शनशास्त्र से संबंधित प्राचीन शास्त्रों, टीकाओं, शोध-पत्रों, जर्नल्स एवं संदर्भ पुस्तकों का विशाल भंडार उपलब्ध कराता है, जो उच्च स्तरीय अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए अत्यंत उपयोगी है।

यह समेकित एवं उन्नत अवसंरचना सुनिश्चित करती है कि विद्यार्थी केवल सैद्धान्तिक ज्ञान तक सीमित न रहकर, गहन चिंतन, तार्किक विश्लेषण एवं अनुसंधान कौशल में भी दक्षता प्राप्त करें, जिससे वे वैश्विक परिप्रेक्ष्य में प्रतिस्पर्धी एवं सक्षम बन सकें।

21.प्रयोगशाला सहयोग एवं पुस्तकालय संसाधनों की आवश्यकता

प्रस्तुत पाठ्यक्रम की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए पृथक प्रयोगशाला की आवश्यकता नहीं है। तथापि, अधिगम प्रक्रिया को सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाने हेतु विश्वविद्यालय द्वारा एक समृद्ध डिजिटल पुस्तकालय सुविधा उपलब्ध कराई गई है। इस डिजिटल पुस्तकालय के माध्यम से शिक्षार्थियों को विविध शैक्षणिक संसाधनों, शोध-पत्रों, संदर्भ ग्रंथों तथा अन्य प्रासंगिक अध्ययन सामग्रियों तक व्यापक पहुँच प्राप्त होती है। यह व्यवस्था सतत अधिगम एवं गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान को प्रोत्साहित करने में सहायक सिद्ध होती है।

22.कार्यक्रम की लागत का अनुमान एवं प्रावधान

कार्यक्रम के अभिकल्पन, विकास, कार्यान्वयन तथा अनुरक्षण से संबंधित समस्त व्यय का वहन विश्वविद्यालय द्वारा वार्षिक बजट सत्र में स्वीकृत प्रावधानों के अनुरूप किया जाएगा। इस हेतु आवश्यक वित्तीय संसाधनों का आवंटन विश्वविद्यालय की निर्धारित वित्तीय नीतियों एवं प्रक्रियाओं के अनुसार सुनिश्चित किया जाएगा।

॥ ओ३म् ॥

बी.ए. दर्शन

पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

Semester-I

CREDIT: -05
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

BDPHMJ-101

योगदर्शनम्

उद्देश्यः-

- योग एवं योग से सम्बन्धित भाष्य वार्तिक व टीकाओं से परिचय करवाना।
- पातञ्जल योगसूत्र के चारों पादों के सूत्रार्थ एवं व्याख्या से अवगत कराना।
- योग सूत्रों को कण्ठस्थ कराना।
- योगदर्शन में वर्णित 'अष्टांग योग' के पालन से जीवन को पवित्र व चरित्रवान् बनाना।

खण्ड-1 महर्षि पतंजलि जी का जीवन परिचय एवं योगदर्शन का सामान्य परिचय तथा चित्त की भूमियाँ

इकाई- 1.1 योग शब्द की व्युत्पत्ति

इकाई- 1.2 योग दर्शन का रचना काल एवं महर्षि पतंजलि जी का संक्षिप्त परिचय

इकाई- 1.3 योग का स्वरुप

इकाई- 1.4 चित्त की भूमियाँ या स्थितियाँ

खण्ड-2 समाधिपाद

इकाई- 2.1 चित्त की वृत्तियाँ

इकाई- 2.2 चित्त वृत्ति निरोध का उपाय (अभ्यास-वैराग्य)

इकाई- 2.3 समाधि और समाधि के प्रकार

इकाई- 2.4 ईश्वर का स्वरुप

इकाई- 2.5 चित्त की प्रसन्नता एवं एकाग्रता के उपाय

खण्ड-3 साधनपाद

इकाई- 3.1 क्रिया योग एवं क्रिया योग का फल

इकाई- 3.2 पञ्च क्लेश तथा अविद्या क्लेशों की जननी

इकाई- 3.3 दृश्य एवं दृष्टा का स्वरुप

इकाई- 3.4 अष्टांग योग का वर्णन

खण्ड-4 विभूतिपाद

इकाई- 4.1 ध्यान, धारणा और समाधि का स्वरुप

इकाई- 4.2 संयम का स्वरूप और संयम का फल

इकाई- 4.3 अन्तरंग और बाह्य-अंग योग का स्वरुप

इकाई- 4.4 विभूतियों का संक्षिप्त परिचय

इकाई- 4.5 क्षण और उसके क्रम में में संयम का फल विवेकज ज्ञान

खण्ड-5 कैवल्यपाद

इकाई- 5.1 सिद्धियों के प्रकार

इकाई- 5.2 कर्मो के प्रकार

इकाई- 5.3 धर्ममेघ समाधि का स्वरुप

इकाई- 5.4 प्रतिप्रसव या कैवल्य योग

परिणामः-

- योग एवं योग से सम्बन्धित भाष्य, वार्तिक एवं टीकाओं का विशेष ज्ञान होगा।
- योगदर्शन के चारों पादों के सूत्रार्थ एवं भावार्थ की स्पष्ट जानकारी प्राप्त होगी।
- योगसूत्र शुद्ध उच्चारणपूर्वक कण्ठस्थ होगा।
- अष्टांग योग को आत्मसात् करके पवित्रता व दिव्यता से युक्त होकर दिव्य चरित्र व व्यक्तित्व वाला बन जाता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- योगदर्शन- स्वामी योगर्षि रामदेव, दिव्य प्रकाशन, हरिद्वार।

पातञ्जलयोगदर्शनम् - डॉ. आचार्या साध्वी देवप्रिया, दिव्य प्रकाशन, हरिद्वार।

पातञ्जलयोगदर्शनम् - हरिहरानन्द आरण्य, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

BDPHMN-102

CREDIT: -04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

............दर्शन

उद्देश्य-

- चार्वाक दर्शन की दार्शनिक अवधारणाओं का परिचय कराना।
- जैन दर्शन की आधारभूत अवधारणाओं का परिचय कराना एवं इसके विभिन्न सम्प्रदायों का परिचय कराना।
- बौद्ध दर्शन के मूल सिद्धान्तों से अवगत कराना एवं इसके प्रमुख सम्प्रदायों (शून्यवाद, विज्ञानवाद, वैभाषिक, सौत्रान्तिक)का परिचय कराना।

खण्ड-1 चार्वाक दर्शन

इकाई-1.1 प्रर्वतक, ज्ञान मीमांसा, जगत सम्बन्धी विचार,

इकाई-1.2 आत्म सम्बन्धी विचार, ईश्वर सम्बन्धी विचार,

इकाई-1.3 पुनर्जन्म, स्वर्ग, नरक आदि सम्बन्धी विचार, आचार मीमांसा,

इकाई-1.4 चार्वाक का योगदान, चार्वाक दर्शन की समीक्षा।

खण्ड-2 जैन दर्शन

इकाई-2.1 प्रवर्तक, अर्थ एवं नामकरण, जैन साहित्य,

इकाई-2.2 तत्व मीमांसा, अनेकान्तवाद, सत् का स्वरूप,

इकाई-3.3 ज्ञान मीमांसा, स्याद्वाद, कर्म सम्बन्धी विचार,

इकाई-3.4 महाव्रत, त्रिरत्न, बंधन एवं मोक्ष, जैन दर्शन की समीक्षा।

खण्ड-3 बौद्ध दर्शन

इकाई-3.1 चार आर्य सत्य,

इकाई-3.2 सम्यक समाधि,

इकाई-3.3 कारणता सम्बन्धी सिद्धान्त अथवा प्रतीत्यसमुत्पाद,

इकाई-3.4 अनात्मवाद, सत् सम्बन्धी विचार अथवा क्षणिकवाद,

खण्ड-4 बौद्ध सम्प्रदाय

इकाई-4.1 नर्वाण का स्वरूप,

इकाई-4.2 अव्यक्तानि,

इकाई-4.3 अपोहवाद,

इकाई-4.4 बौद्ध मत के सम्प्रदाय।

परिणाम–

- वैदिक दर्शन से भिन्न भारतीय दार्शनिक सिद्धान्तों से विद्यार्थियों का परिचय होगा
- आस्तिकता, नास्तिकता, आत्मा एवं सृष्टि प्रक्रिया समझने के लिए अन्य भारतीय दार्शनिक सिद्धान्तों की तुलनात्मक जानकारी प्राप्त होगी।
- भारतीय दर्शनों की सम्पूर्ण अवधारणाओं एवं सिद्धान्तों को विस्तारपूर्वक समझने का अवसर प्राप्त होगा।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक– सर्वदर्शन संग्रह, प्रो. उमाशंकर शर्मा (ऋषि) प्रकाशक–चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी।

BDPHID-103 (1)

संस्कृतसाहित्यम्-I

CREDIT: -03
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

उद्देश्य-

1. संस्कृत व्याकरण का आधारभूत ज्ञान प्रदान कराना।
2. वर्णोच्चारण शिक्षा का बोध कराना। 3. संज्ञाओं व सन्धि प्रकरण से परिचित कराना।
4. पद्यात्मक काव्यों की अध्ययनशैली से अवगत कराना।

खण्ड-1 : शिक्षाप्रकरणं (पाणिनीय शिक्षा) संज्ञाप्रकरणञ्च

इकाई-1.1 वर्णों के स्वरूप, स्थान (अकुहविसर्जनीयाः कण्ठ्याः इत्यादयः) व प्रयत्न (स्पृष्टकरणा स्पर्शाः इत्यादयः) ।

इकाई-1.2 प्रत्याहार सूत्रों का परिचय एवं प्रत्याहार निर्माण विधि।

इकाई-1.3 विविध संज्ञाओं का ज्ञान (वृद्धिरादैच्, अदेङ्गुण इत्यादयः) ।

खण्ड-2 : सन्धिप्रकरणमजन्तपुल्लिङ्गप्रकरणञ्च

इकाई-2.1 अच् सन्धि - इको यणचि, एचोऽयवायावः, आद्गुणः, अकः सवर्णे दीर्घः, अमि पूर्वः, एङि पररूपम्, ऋत् उत्, ङसिङसोश्च, इत्यादयः।

इकाई-2.2 हल् सन्धि - खरि च, ष्टुनाष्टुः, स्तोःश्चुना श्चुः, हलो यमां यमि लोपः, झरो झरि सवर्णे, अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः इत्यादयः।

इकाई-2.3 अथ विसर्गसन्धि-(विसर्जनीयस्य सः इत्यादयः) (4) अजन्तपुल्लिङ्गप्रकरणम्

खण्ड-3 : अजन्तस्त्रीलिङ्गनपुंसकलिङ्गप्रकरणं हलन्तपुल्लिङ्ग प्रकरणञ्च।

इकाई-3.1 अजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्

इकाई-3.2 अजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम्

इकाई-3.3 हलन्तपुल्लिङ्गप्रकरणम्

खण्ड-4 : भगवान् श्रीकृष्ण का जन्म वृतांत एवं बाल लीलाएँ ।

इकाई-4.1 मथुरा में कंस के कारावास में भगवान श्रीकृष्ण का जन्म ।

इकाई-4.2 वसुदेव जी द्वारा गोकुल जाकर नन्दगोप जी को श्रीकृष्ण को सौंपना ।

इकाई-4.3 बाल्यावस्था में अनेक राक्षसों का वध करना जैसे- पूतना, केशी, अरिष्टर्षभ आदि।

परिणाम-

1. संस्कृत व्याकरण के आधारभूत ज्ञान से शब्दों की वैज्ञानिक पद्धति से परिचित हो जाता है।
2. वर्णोच्चारण शिक्षा, सन्धि व संज्ञाओं के बोध से वर्णो एवं शब्दों के शुद्धतापूर्वक उच्चारण व उत्कृष्ट संस्कृत संभाषण करने व कराने में समर्थ हो जाता है।
3. काव्यात्मक शैली के परिचय से नाटकों के लेखन एवं मंचन में व्यावसायात्मक दृष्टि से सक्षम हो जाते हैं।

BDPHID-103(2)

CREDIT: -03
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

प्राचीन भारत का इतिहास-1

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः-

इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को मौर्य काल तक की ऐतिहासिक प्रक्रियाओं को समझना है। जिसमें इतिहास की प्रामाणिकता को सिद्ध करने के साथ ही विश्व की प्रथम नगरीकरण भारतीय सभ्यता, महान वेदों की परम्परा का ज्ञान तथा महान मौर्यों की विरासत के स्वर्णिम इतिहास से अवगत कराना है।

खण्ड-1 भारतीय इतिहास को जानने के स्रोत

इकाई-1.1 इतिहास में स्रोतों का महत्व

इकाई-1.2 साहित्यिक स्रोत

इकाई-1.3 पुरातात्विक स्रोत

इकाई-1.4 विदेशी यात्रियों का विवरण

खण्ड-2 सैंधव सभ्यता उत्पत्ति एवं विकास

इकाई-2.1 सैंधव सभ्यता का परिचय

इकाई-2.2 सैंधव सभ्यता की नगर योजना

इकाई-2.3 सैंधव सभ्यता की सामाजिक, आर्थिक एवं धाार्मिक व्यवस्था

इकाई-2.4 सैंधव सभ्यता की कला

खण्ड-3 वैदिक सभ्यता

इकाई-3.1 वैदिक काल का परिचय

इकाई-3.2 ऋग्वैदिक कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक परम्पराएं

इकाई-3.3 उत्तरवैदिक कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक परम्पराएं

इकाई-3.4 उपनिषदीय धर्म एवं विभिन्न शिक्षाएं

खण्ड-4 छठीं शताब्दि ई.पू. से मौर्य काल तक का राजनीति इतिहास

इकाई–4.1 हर्यक वंश

इकाई–4.2 नन्द वंश

इकाई–4.3 मौर्य काल– मौर्य वंश का परिचय, चन्द्रगुप्त एवं बिन्दुसार

इकाई–4.4 सम्राट अशोक

परिणाम–

- इतिहास की वास्तविक अवधारणा के प्रति दृष्टिकोण की समझ विकसित करने में।
- भारतीय सभ्यता अर्थात सैंधव सभ्यता के विशिष्ट सोपानों के महत्व को जानने में।
- वेदों की महानता से युवा पीढ़ी को परिचय कराना।
- मौर्य साम्राज्य की महानता को स्थापित करने में।

पाठ्य पुस्तक– शर्मा, एल. पी.: प्राचीन भारत, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2022 उपेन्द्र सिंहः प्राचीन और पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास पााण काल से 12 वीं शताब्दि ई0 दिल्ली 2016.

BDPHAE-104

CREDIT: -02
CA: 15
SEE: 35
MM: 50

ENGLISH COMMUNICATION SKILLS

Block 1: Fundamentals of English language

Unit 1: Basics of Grammar

Unit 2: Vocabulary Building

Unit 3: Pronunciation and Phonetics

Unit 4: Everyday Expressions

Block 2: Reading and Listening Skills

Unit 1: Reading Comprehension

Unit 2: Summarizing and Paraphrasing

Unit 3: Active Listening

Unit 4: Note-Taking Strategies

Block 3: Speaking Skills

Unit 1: Introduction to Speaking

Unit 2: Speaking for social interaction

Unit 3: Descriptive and Narrative Speaking

Unit 4: Oral Presentation

Block 4: Writing Skills

Unit 1: Paragraph Writing

Unit 2: Letter Writing

Unit 3: Email Writing

Unit 4: Article Writing

CREDIT: -03
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

(BDPHSE-105(1)

योगचिकित्सा-1

उद्देश्यः

- भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति के समन्वित् स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगों का निदान।
- योग, आयुर्वेद, पञ्चकर्म, षट्कर्म, नेचुरोपैथी, आहार चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर एवं फिजियो थैरेपी जैसे समन्वित् भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धांन्तिक एवं प्रयोगात्मक बोधा द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित -व्यक्तित्व का निर्माण करना।

खण्ड-1 मानव शरीर विज्ञान

इकाई-1.1 मानव शरीर परिचय,

इकाई-1.2 श्वसन तंत्र, शरीर संरचना विज्ञान एवं क्रिया विज्ञान की अवधाारणा,
श्वसन तंत्र पर योगिक प्रभाव (आसन, प्राणायाम, षट्कर्म, मुद्रा, बंध, औषधि)

इकाई-1.3 पाचन तंत्र- पाचन तंत्र की अवधारणा, पाचन तंत्र पर योगिक प्रभाव (आसन
प्राणायाम षट्कर्म, मुद्रा, बंध, औषधि)

इकाई-1.4 तंत्रिका तंत्र- तंत्रिका तंत्र की अवधारणा, तंत्रिका तंत्र पर योगिक प्रभाव
(आसन प्राणायाम षट्कर्म, मुद्रा, बंध, औषधि)

खण्ड-2 योग एवं स्वास्थ्य का समग्र स्वरूप

इकाई-2.1 योग एवं स्वास्थ्य का अर्थ, स्वरूप एवं प्रयोजन,
योग की प्रमुख धारायें, योग से व्याधि निरोग के उपाय।

इकाई-2.2 मुख्य प्राणायाम एवं रोगानुसार प्राणायाम विधियॉ।

इकाई-2.3 व्याधि के अनुसार आहार, औषधि एवं योगाभ्यास।

इकाई-2.4 मोटापा, मेरुदंड एवं विद्यार्थी व युवाओं के लिए योगाभ्यास व प्राणायाम

CREDIT: -03
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

खण्ड–3 आयुर्वेद के आधारभूत तत्व

इकाई–3.1 त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) के गुण, लक्षण, कारण एवं उपचार एवं आहार।

इकाई–3.2 त्रिउपस्तंभ–आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य

इकाई–3.3 स्वस्थवृत्त (दिनचर्या एवं रात्रिचर्या)

इकाई–3.4 त्रिदण्डवत्–शरीर, मन, आत्मा

खण्ड–4 प्राथमिक चिकित्सा विधि

इकाई–4.1 सामान्य परिचय , हड्डी का टूटना व मोच का उपचार श्वसन व हृदय संकट ,रक्त स्त्राव का उपचार ।

इकाई–4.2 विशेष आपातकालीन स्थितियॉ–नशे की स्थिति, बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं के लिए प्राथमिक चिकित्सा।

इकाई–4.3 रसोई घर में प्रयोग होने वाली मुख्य औषधि, एवं मसाले का प्रयोग ।

इकाई–4.4 प्राथमिक घरेलू उपचार।

परिणाम–

समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य–असाध्य रोगों से पीड़ित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है।

सेवा निष्ठा आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यों को भी रोजगार परक सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकार परख उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है।

सहायक ग्रन्थः– उपचार पद्धति, आचार्य बालकृष्ण, दिव्य प्रकाशन पतंजलि योगपीठ महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग–58 निकट– बहादराबाद, हरिद्वार– 249405 (उत्तराखण्ड)

आयुर्वेद सिद्धान्त रहस्य, आचार्य बालकृष्ण, दिल्ली हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग–58 निकट– बहादराबाद, हरिद्वार– 249405 (उत्तराखण्ड)

मानव शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान, प्रो. (डॉ.) अनन्त प्राश गुप्ता, प्रकाशक–सुमित प्रकाशन (आगरा,दल्ली)।

BDPHSE-105 (2)
गायन एवं वादन का प्रारम्भिक बोध

उद्देश्यः-

- संगीत की मूलभूत जानकारी प्रदान करना। भारतीय संगीत की परंपरा और विकास से परिचित कराना।
- धवनि, नाद, स्वर, ताल व राग की समझ विकसित करना। उत्तर दक्षिण भारतीय संगीत की विशेषताओं को समझाना।
- ताल वाद्य और उसकी संरचना का ज्ञान देना। अलंकार और अभ्यासों द्वारा गायन क्षमता बढ़ाना।
- स्वर में नियंत्रण लाना, संगीत में योग के माधयम से एकाग्रता, अनुशासन व रचनात्मकता को बढ़ावा देना

खण्ड-1 संगीत का सांक्षिप्त इतिहास सैद्धान्तिक

इकाई-1.1 संगीत परिचय एवं परिभाषा
इकाई-1.2 संगीत की उत्पत्ति प्रकार
इकाई-1.3 उत्तर एवं दक्षिण भारतीय संगीत
इकाई-1.4 मार्गी एवं देज़ी संगीत

खण्ड-2 संगीत शास्त्र, पारिभाषिक शब्द

इकाई-2.1 धवनि, धवनि की उत्पत्ति, नाद, प्रकार
इकाई-2.2 अलंकार एवं स्वर प्रकार
इकाई-2.3 श्रुति, सप्तक
इकाई-2.4 पाँच श्लोक (राग-ताल परिचय)

खण्ड-3 ताल, वाद्य परिचय क्रियात्मक

इकाई-3.1 वाद्यों के प्रकार
इकाई-3.2 मात्र, लय, सम, विभाग, ठेका, ताली खाली
इकाई-3.3 तीनताल परिचय एवं ठाह की लय
इकाई-3.4 12 स्वर सप्तक एवं 5 स्वस्तिवाचन्मंत्र

खण्ड-4 संगीत, योग और धयान

इकाई-4.1 ओउम् का स्थान एवं खरज साधाना
इकाई-4.2 सासों का अभ्यास (आवाज बनाने हेतु)
इकाई-4.3 1 से 5 अलंकार (क्रमिक पु.म.भाग-1)
इकाई-4.4 प्राथमिक संगीत धयान

परिणम :-

- विद्यार्थी संगीत की मूल परिभाषा व इतिहास को समझ सकेंगे। उत्तर व दक्षिण भारतीय संगीत के मुख्य अतंर व विशेषताओं को पहचान सकेंगे। खरज साधाना व साँसों के अभ्यास से स्वर नियंत्रण बेहतर होगा।

- संगीत और धयान के अभ्यास से एकाग्रता व मानसिक संतुलन में वृद्धि होगी। प्राथमिक गायन अभ्यास (अलंकार) द्वारा गायन की बुनियादी क्षमता विकसित होगी।

CREDIT: -03
CA: 35
SEE: 75
MM: 100

(BDPHVA-106(1)
सनातन सस्कृति बोध-१

उद्देश्य-

- **ऋग्वेद एवं यजुर्वेद के चयनित सूक्त एवं मन्त्रों से अवगत कराना।**
- वैदिक षड्दर्शनों का सामान्य परिचयात्मक ज्ञान कराना।
- गीता एवं उपनिषद् के प्रसिद्ध प्रसंगों का बोध कराना।
- भारतीय नीति ग्रन्थों एवं षोडश संस्कारों से अवगत कराना।

खण्ड-1 ऋग्वेद एवं यजुर्वेद के चयनित मन्त्र

इकाई-1.1 वेद का अर्थ, परिचय, वेदों के प्रतिपाद्य विषय

इकाई-1.2 **ऋग्वेद के प्रमुख सूक्त (अग्नि, श्रद्धा, संगठन)**

इकाई-1.3 **ऋग्वेद के प्रमुख सूक्त (पुरूष , नासदीय)**

इकाई-1.4 यजुर्वेद के प्रमुख मन्त्रों के अर्थ

खण्ड-2 वैदिक षड्दर्शनों का सामान्य परिचय

इकाई-2.1 योगदर्शन के चयनित सूत्रों का परिचय

इकाई-2.2 सांख्यदर्शन के चयनित सूत्र का परिचय

इकाई-2.3 न्याय एव वैशेषिक दर्शनों के चयनित सूत्र

इकाई-2.4 वेदान्त एवं मीमांसा दर्शन के चयनित सूत्र

खण्ड-3 श्रीमद्भगवद्गीता एवं उपनिषद् परिचय

इकाई-3.1 गीता-योग की परिभाषा, स्थितप्रज्ञता, साधना की विधि आदि

इकाई-3.2 दैवासुर सम्पद् ,तीन प्रकार के (तप, सुख, कर्ता, आहार)

इकाई-3.3 उपनिषद् - ईशोपनिषद् के मन्त्रों की व्याख्या

इकाई-3.4 केनोपनिषद एवं कठोपनिषद् के चयनित मन्त्रों की व्याख्या

खण्ड-4 सोलह संस्कार एवं नीतिग्रन्थों का परिचय

इकाई-4.1 सोलह संस्कार- गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तो., जातकर्म, नामकरण

इकाई-4.2 निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन

इकाई-4.3 वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह , वानप्रस्थ, संन्यास, अन्त्येष्टि ।

इकाई–4.4 चाणक्य नीति, विदूर नीति, भर्तृहरि के चयनित श्लोक ।

CREDIT: -05
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

परिणाम :-

- वेद के कतिपय प्रसिद्ध सूक्त एवं मन्त्रों का शुद्धतापूर्वक वाचन एवं व्याख्यान करने में विद्यार्थी समर्थ हो जाता है।
- वैदिक षड्दर्शनों के सिद्धान्तों के तुलनात्मक विश्लेषण में दक्ष हो जाता है।
- गीता एवं उपनिषद् के उपर्युक्त चयनित प्रसंगों का अधिगम होगा।
- नीति–शास्त्रों एवं षोडश संस्कारों का विशद् ज्ञान अर्जित होगा।

सहायक ग्रन्थः-

1. सनतन संस्कृति के श्रेष्ठ जीवन मूल्य, डॉ. साध्वी देवप्रिया, दिव्य प्रकाशन पतंजलि योगपीठ महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग–58 निकट– बहादराबाद, हरिद्वार– 249405 (उत्तराखण्ड)
2. वेदामृत– डॉ. साध्वी देवप्रिया, दिव्य प्रकाशन पतंजलि योगपीठ महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग–58 निकट– बहादराबाद, हरिद्वार– 249405 (उत्तराखण्ड)।

Semester-II

CREDIT: -04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

BDPHMJ-201
(प्रथम एवं द्वितीय अध्याय)

उद्देश्यः-

- न्याय के ऐतिहासिक एवं पौराणिक तथ्यों से अवगत कराना।
- न्याय के सम्बन्धित भाष्य, वार्तिक एवं विभिन्न टीकाओं से परिचय करवाना।
- प्रथम दो अध्यायों के सूत्रों के सूत्रार्थ एवं व्याख्या को स्पष्ट कराना तथा साथ ही सूत्रों को कण्ठस्थ कराना।
- न्यायदर्शन के अध्ययन से बुद्धि को सूक्ष्म व स्थिर बनाकर अत्यंत जटिल समस्याओं का भी समाधान करवाना।

खण्ड-1 प्रमाण से निर्णय पर्यन्त तत्वों का उद्देश एवं लक्षण- प्रमाण व प्रमेय का स्वरूप, संशय एवं प्रयोजन, दृष्टान्त और सिद्धान्त, अवयव, तर्क तथा निर्णय।

खण्ड-2 कथा, हेत्वाभास, छल, जाति एवं निग्रहस्थान का स्वरूप एवं प्रभेद- वाद, जल्प एवं वितण डा का स्वरूप, हेत्वाभास का लक्षण एवं प्रभेद, छल का स्वरूप एवं प्रकार, जाति एवं निग्रहस्थान का स्वरूप।

खण्ड-3 सभी प्रमाणों की परीक्षा एवं वेद का प्रामाण्य- प्रमाण सामान्य परीक्षा, प्रत्यक्ष प्रमाण परीक्षा, अनुमान प्रमाण परीक्षा, उपमान प्रमाण परीक्षा, शब्द प्रमाण परीक्षा एवं वेद का प्रामाण्य।

खण्ड-4 प्रमाण का चतुष्ट्वत्व एवं शब्द का अनित्यत्व- प्रमाण का चतुष्ट्वत्व, शब्द का अनित्यत्व।

परिणामः-

- न्याय के षोडश पदार्थो के उद्देश्य एवं लक्षण का बोध कर लेता है।
- चतुर्विध प्रमाणों के विस्तृत विवेचन करने में कुशल हो जाता है।
- उपरोक्त सूत्रों का कण्ठस्थ कर लेता है।
- बुद्धि के सूक्ष्म व स्थिर बनने से अत्यंत जटिल समस्याओं का समाधान करने में समर्थ हो जाता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- न्यायदर्शन, आचार्य उदयवीर शास्त्री ,
प्रकाशक-विजयकुमार, गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली- 110006
एवं न्यायदर्शनम्, प्रकाशक-दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

पाश्चात्य दर्शन

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

1. विद्यार्थियों को ग्रीक दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों का ज्ञान कराना।
2. प्राचीन पाश्चात्य दार्शनिकों के वैचारिक मत एवं सिद्धान्तों को जानना।
3. बुद्धिवादी, अनुभववादी एवं समीक्षात्मक दर्शन का तुलनात्मक परिचय व ज्ञान मीमांसीय, तत्व मीमांसीय एवं आचार मीमांसीय बोध कराना।
4. पाश्चात्य दर्शन के इतिहास को भलीभांति जानना।

खण्ड-1 सुकरात पूर्व के दार्शनिक

इकाई-1.1 थेल्स, एनेक्जीमेंडर, एनेक्जिमेनीज, पाइथागोरस, हेरेक्लाइट्स, पाइथागोरस, हेरेक्लाइट्स, पार्मेनीडिज, सॉफिस्ट प्रोटेगोरस, जॉर्जियस

इकाई-1.2 सुकरात- दार्शनिक पद्धति, सद्गुण,

इकाई-1.3 लेटा- प्रत्यय, ज्ञानमीमांसा, आत्मा की अमरता

इकाई-1.4 अरस्तु- द्रव्य एवं स्वरूप, कारणता का सिद्धान्त,

खण्ड-2 आधुनिक दर्शन (बुद्धिवाद)

इकाई-2.1 रेने देकार्त- द्रव्य विचार, आत्मा का विचार, क्रिया-प्रतिक्रियावाद

इकाई-2.2 स्पिनोजा- द्रव्य विचार, सर्वेश्वरवाद, समानान्तरवाद

इकाई-2.3 लाईब्नित्ज- चिदणुवाद।

इकाई-2.4 पूर्व स्थापित सामंजस्य

खण्ड-3 अनुभवाद

इकाई-3.1 बर्कले- जड़वाद की आलोचना, आत्मगत प्रत्ययवाद

इकाई-3.2 ह्यूम-संशयवाद,

इकाई-3.3 कार्य कारणता का सिद्धान्त,

इकाई–3.4 आत्मा एवं ईश्वर विचार

CREDIT: -03
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

खण्ड–4 काण्ट का समीक्षावाद

इकाई–4.1 संश्लेषणात्मक एवं विश्लेषणात्मक ज्ञान

इकाई–4.2 बुद्धि की कोटियाँ

इकाई–4.3 देश काल की अवधरणा

इकाई–4.4 अज्ञेयवाद।

परिणाम–

1. ग्रीक दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों का विवरण।

2. प्राचीन पाश्चात्य दार्शनिकों के वैचारिक सिद्धान्तों की विद्यार्थियों को जानकारी प्राप्त होगी।

3. बुद्धिवादी एवं अनुभववादी चिन्तकों व दार्शनिकों का परिचय व सिद्धान्तों का विवरण प्राप्त होगा।

4. भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन के बारे में तुलनात्मक चिंतन विकसित होगा।

BDPHID-203 (1)
संस्कृतसाहित्यम्-II

CREDIT: -03
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

1. संस्कृत साहित्य के सम्यक् ज्ञान हेतु संस्कृत वाक्यों में प्रयुक्त विभिन्न कारकों व विभक्तियों में ज्ञान कराना।

2. सुसंस्कृत पदों की रचना हेतु समास की विधा से परिचय कराना।

3. संस्कृत साहित्यिक विधा से परिचय कराना।

खण्ड-1 कारकप्रकरणं विभक्तिश्च-

संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त विभिन्न कारकों (कर्त्ता, कर्म आदि) तथा विभक्तियों (प्रथमा, द्वितीया आदि) का सूत्र एवं उदाहरणों सहित परिचय ।

खण्ड-2 समासप्रकरणम् -

संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त प्रमुख समासों (तत्पुरुष समास, बहुब्रीहि समास आदि) तथा उनके विभिन्न प्रभेदों का सूत्रों एवं उदाहरणों सहित वर्णन ।

खण्ड-3 कालिय नाग का मानमर्दन एवं कंस का वध ।

भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कालिन्दी नदी में प्रवेश कर अत्यन्त भयानक कालिय नाग के आतंक से गोकुलवासियों के साथ-साथ प्राणि मात्र को अभय प्रदान करना तथा मथुरा जाकर कंस का वध कर उसके आतंक से समस्त जनता को मुक्त करना ।

चतुर्थ इकाई- शब्दरूप, धातुरूप (1-15 अभ्यास पर्यन्त)ए अनुवाद, संख्याएँ (1-100)।

परिणाम-

1. संस्कृत व्याकरण के आधारभूत ज्ञान से शब्दों की वैज्ञानिक पद्धति से परिचित होकर शब्दार्थ व वाक्यार्थ बोध करने व कराने में सक्षम हो जाता है।

2. संस्कृत वाक्यों में प्रयुक्त विभिन्न कारकों, विभक्तियों, समास के ज्ञान में पारंगत हो जाता है ।

3. नाट्य शैली की साहित्यिक विधा से परिचित होकर व्यावसायिक कुशलता प्राप्त कर लेता है।

प्राचीन भारत का इतिहास -2

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:-

इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मौर्य काल के पश्चात से लेकर गुप्त काल तक की ऐतिहासिक प्रक्रियाओं को समझना है। जिसमें मौर्योत्तर काल में हूए विदेशी आक्रमणों के प्रभाव से लेकर महान गुप्तों के शासन काल के स्वर्णिम इतिहास से अवगत कराना है।

खण्ड-1 मौर्योत्तरकालीन राजवंशों का परिचय

इकाई-1.1 शुंग राजवंश-पुष्यमित्र शुंग

इकाई-1.2 कण्व राजवंश

इकाई-1.3 सातवाहन वंश का परिचय

इकाई-1.4 महामेघवाहन वंश- खारवेल

खण्ड-2 मौर्योत्तरकालीन विदेशी राजवंशों का परिचय

इकाई-2.1 भारतीय यवनों का परिचय

इकाई-2.2 शक क्षेत्रपों का राजनैतिक इतिहास

इकाई-2.3 पल्लव वंश

इकाई-2.4 कुषाण वंश कनिष्क की राजनैतिक उपलब्धियाँ

खण्ड-3 गुप्तवंश परिचय

इकाई-3.1 गुप्त वंश का परिचय एवं प्रारम्भिक इतिहास,

इकाई-3.2 समुद्रगुप्त की राजनैतिक उपलब्धियाँ,

इकाई-3.3 चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की राजनैतिक उपलब्धियाँ,

इकाई-3.4 चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के उत्तराधिकारी एवं गुप्त राजवंश के पतन के कारण।

इकाई चतुर्थ- मौर्योत्तरकाल से गुप्त काल तक का सांस्कृतिक विकास

इकाई-4.1 सामाजिक परम्पराएं

इकाई-4.2 आर्थिक जीवन

इकाई-4.3 नवीन धर्मिक परम्पराओं का उद्भव एवं विकास

इकाई-4.4 स्थापत्य कला एवं मूर्तिकला का विकास

परिणाम–

CREDIT: -02
CA: 15
SEE: 35
MM: 50

- विदेशी आक्रमणों के प्रभाव के प्रति दृष्टिकोण की समझ विकसित करने में।
- मौर्य काल के बाद के राजवंशों के विभिन्न शासकों के कार्यों में अंतर पर विचारों का आदान–प्रदान करने में।
- गुप्त साम्राज्य की महानता को स्थापित करने में।
- वाकाटक काल की सांस्कृतिक उपलब्धियों की व्याख्या करने में।

पाठ्य पुस्तक– शर्मा, एल0 पी0ः प्राचीन भारत, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2022 उपेन्द्र सिंहः प्राचीन और पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास पााण काल से 12 वीं शताब्दि ई0 दिल्ली 2016.

BDPHAE-204

Advanced English communication Skills

➢ **Course Objectives**

To reinforce grammar and vocabulary use, including subject-verb agreement, phrasal verbs, idioms, and homophones.

1. To develop effective listening and speaking skills for academic and professional contexts such as presentations, interviews, and group discussions.
2. To enhance reading comprehension through critical reading, analysis, and vocabulary development.
3. To strengthen writing skills in academic, business, and professional communication, with emphasis on clarity, tone, and accuracy.

To promote proofreading and editing skills to ensure well-polished communication in various formats.

Block 1: Grammar and Vocabulary in use

Unit 1: Subject-verb Agreement

Unit 2: Reported Speech

Unit 3: Phrasal Verbs, Idioms and Collocations

Unit 4: Homophones and Homonyms

Block 2: Listening and Speaking Skills

Unit 1: Academic and Professional Listening

Unit 2: Public Speaking

Unit 3: Debates and Group Discussion

Unit 4: Interview

Block 3: Advanced Reading Strategies

CREDIT: -03
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

Unit 1: Reading Academic and Professional Texts

Unit 2: Critical Reading

Unit 3: Analysis and Interpretation

Unit 4: Vocabulary in ontext

Block 4: Advanced Writing Skills

Unit1: Academic Writing

Unit 2: Business letters and Report Writing

Unit 3: Resume and Cover letter

Unit 4: Editing and Proof Reading

- **Course Outcomes**

By the end of this course, students will be able to:

1. Apply advanced grammar and vocabulary accurately in both speech and writing.
2. Listen and respond effectively in academic and professional settings, including interviews, discussions, and public speaking.
3. Engage in structured debates and group discussions with clarity and confidence.
4. Read and analyze academic and professional texts critically for main ideas, tone, and purpose.
5. Interpret complex texts using advanced reading strategies and contextual vocabulary understanding.
6. Write academic essays, reports, business letters, resumes, and cover letters with proper structure and tone.

7. Edit and proofread written content for grammatical accuracy, coherence, and professionalism.

BDPHSE-205(1)

योग चिकित्सा–2

उद्देश्यः

- भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति के समन्वित् स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगों का निदान।
- योग,आयुर्वेद,पञ्चकर्म,षट्कर्म,नेचुरोपैथी,आहार चिकित्सा,यज्ञचिकित्सा,एक्यूप्रेशर एवं समन्वित् भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धांन्तिक एवं प्रयोगात्मक बोध द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित –व्यद्रित्व का निर्माण करना।

खण्ड–1 प्राकृतिक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य –

इकाई–1.1 प्राकृतिक चिकित्सा का परिचय

इकाई– 1.2 मिट्टी चिकित्सा (पृथ्वीतत्व)

इकाई– 1.3 जल चिकित्सा (जलतत्व)

इकाई– 1.4 सूर्य चिकित्सा – (अग्नितत्व)

खण्ड–2 प्राकृतिक चिकित्सा –

इकाई– 2.1 यज्ञ चिकित्सा – (वायुतत्व)

इकाई– 2.2 धूम चिकित्सा – (वायुतत्व)

इकाई– 2.3 उपवास चिकित्सा – (आकाशतत्व)

खण्ड–3 पंचकर्म, षट्कर्म एवं वैकल्पिक चिकित्सा

इकाई– 3.1 पंचकर्म चिकित्सा

इकाई– 3.2 षट्कर्म चिकित्सा

इकाई– 3.3 वैकल्पिक चिकित्सा

खण्ड–4 शमन चिकित्सा

इकाई– 4.1 अभ्यंग, शिरोपिच्चु, शिरोधारा, अक्षितर्पण, नेत्रधारा, कर्णपूरण

इकाई– 4.2 नस्य, पोटली मसाज, बालुका स्वेदन, शक्तिशाली पिण्ड स्वेदन

इकाई– 4.3 उद्वर्तन (पाउडर मसाज), उपनाह, परिज़ेक, स्नेहधारा, गण्डूज़–कवल, सर्वांग वाष्प स्वेदन

इकाई– 4.4 नाड़ी स्वेदन, कर्णधूपन, क्षीरभाप, श्रृंगी, वातमोक्षण, अग्नि कर्म एवं आरोग्य सूत्र।

परिणाम :

CREDIT: -03
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य–असाध्य रोगों से पीड़ित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है।

सेवा निष्ठा आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यों को भी रोजगार परक सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकार परख उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है।

BDPHSE-205(2)

गायन एवं वादन का मधय स्तरीय बोध

उद्देश्यः-

- विद्यार्थियों को संगीत के मूल सिद्धांतों से परिचित कराना।
- गायक एवं वादक के गुण-दोश की समझ विकसित एवं राग, ताल एवं थाट की मूलभूत जानकारी देना।
- भारतीय संगीत परंपरा के महत्वपूर्ण घरानों का परिचय देना। रागों की जातियाँ, गमक, अलंकार तथा लक्षण गीतों की व्यावहारिक जानकारी देना।
- गायन-वादन की सज्जा व प्रस्तुति की विधियों को सिखाना। राग यमन, भैरव आदि का परिचय देकर रागदारी संगीत का अभ्यास कराना।

खण्ड-1 संगीत का सिद्धान्तात्मक अधययन

इकाई-1.1 गायक के गुण एवं दोष

इकाई-1.2 मार्गी/देशी संगीत, एवं थाट

इकाई-1.3 राग की जातियाँ, एवं मुख्य पाँच नियम

इकाई-1.4 मेल राग संक्षिप्त परिचय

खण्ड-2 संगीतकारों का अध्ययन, एवं धवनि सिद्धान्त

इकाई-2.1 पं. विष्णु नारायण भातखण्डे

इकाई-2.2 पं. भीमसेन जोशी

इकाई-2.3 ध्वनि का हमारे जीवन में प्रभाव

इकाई-2.4 गमक की परिभाषा एवं 5-10 अलंकार (क्र.पु.म.भाग-1)

खण्ड-3 राग एवं ताल

इकाई-3.1 वादक के गुण-दोष

इकाई-3.2 एक ताल का परिचय

इकाई-3.3 राग का संक्षिप्त परिचय

इकाई-3.4 तबला मिलाने की विधि एवं साज सज्जा

खंड-4 गायन वादन का घराना एवं राग लेखन

इकाई-4.1 घराना एवं प्रकार

इकाई-4.2 रागों का परिचय (भैरव यमन)

इकाई–4.3 राग यमन लक्षणगीत

इकाई–4.4 राग भैरव स्वरमालिका।

CREDIT: -03
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

परिणामः–

- छात्र संगीत के सिद्धांतों को पहचानेंगे और सही प्रयोग कर सकेंगे।
- गायक–वादक में अच्छे गुण तथा मार्गी/देशी संगीत, थाट एवं जाति की परिभाषा समझेंगे और उनका व्यवहारिक प्रयोग जान पाएंगे।
- राग यमन का लक्षणगीत तथा तबला मिलाने की विधि एवं वाद्य सज्जा की तकनीकी समझ विकसित होगी।
- घरानों की विशेषता और विभिन्न रागों की शैलीगत भिन्नता को जान सकेंगे। जिससे गायन वादन की प्रस्तुति में आत्मविश्वास एवं कलात्मकता बढ़ेगी।

BDPHVA-206 (1)

सनातन संस्कृति बोध-2

उद्देश्य-

- सामवेद एवं अथर्ववेद के चयनित विषय व मन्त्रों से अवगत कराना।
- प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्योपनिषद् का परिचयात्मक ज्ञान कराना।
- स्मृतिग्रन्थों के चयनित प्रंसग का बोध कराना।
- नैतिक मूल्य एवं स्वस्थवृत्त परिचय से अवगत कराना।

खण्ड- 1 सामवेदीय एवं अथर्ववेदीय चयनित मंत्र

इकाई-1.1 सामवेद का परिचय एवं विषय

इकाई-1.2 सामवेद के चयनित मंत्र

इकाई-1.3 अथर्ववेद का परिचय

इकाई-1.4 अथर्ववेद के चयनित मंत्र

खण्ड- 2 प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्योपनिषद् का परिचय

इकाई-2.1 प्रश्नोपनिषद् में प्राणविद्या

इकाई-2.2 मुण्डकोपनिषद् के चयनित प्रसंग

इकाई-2.3 माण्डूक्योपनिषद् में ओंकार का स्वरूप

खण्ड- 3 स्मृतिग्रन्थों के चयनित प्रंसग

इकाई-3.1 वाल्मीकीय रामायण के चयनित श्लोक

इकाई-3.2 महाभारत के चयनित श्लोक

इकाई-3.3 रामचरितमानस के चयनित प्रसंग

इकाई-3.4 पुराण परिचय एवं पुराणों में योग विद्या

खण्ड- 4 नैतिक मूल्य एवं स्वस्थवृत्त परिचय

इकाई-4.1 दिनचर्या के विशेष मंत्र, पंचमहायज्ञ बोध

इकाई–4.2   पंचमहाव्रत परिचय, वर्णाश्रम व्यवस्था परिचय

इकाई–4.3   पञ्चप्राण परिचय, पञ्चकोष परिचय

इकाई–4.4   अष्टाङ्गहृदयम् (चयनित श्लोकाः), जीवन दर्शन

CREDIT: -04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

परिणामः–

- वेद के कतिपय प्रसिद्ध सूक्त एवं मन्त्रों का शुद्धतापूर्वक वाचन एवं व्याख्यान करने में विद्यार्थी समर्थ हो जाता है।
- उपनिषद् के उपर्युक्त चयनित प्रसंगों का अधिगम होगा।
- स्मृतिग्रन्थों का विशद् ज्ञान अर्जित होगा।
- नैतिक मूल्य एवं स्वस्थवृत्त का जीवनोपयोगी कर्त्तव्य पालन होगा।

Semester-3

BDPHMJ – 301

न्याय दर्शन-2 (तृतीयोऽध्यायः)

उद्देश्य-

1. न्यायदर्शन के सूत्रों का कण्ठस्थिकरण अथवा सूत्रार्थ व भाष्य का बोध कराना।
2. आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, अर्थ, बुद्धि एवं मन नामक छः प्रमेयों का ज्ञान कराना।
3. प्रमेयों के यथार्थ ज्ञान से व्यवहार में गुणवत्ता अथवा विशेष सामर्थ को अर्जित करने हेतु दर्शन के महात्म को बताना।

खण्ड - 1 प्रमेय - आत्मा, शरीर इन्द्रिार्थ आदि की परीक्षा

इकाई-1.1 इन्द्रियों से व्यतिरिक्त आत्मा

इकाई-1.2 शरीर से व्यतिरिक्त आत्मा

इकाई-1.3 चक्षुरद्वैत परीक्षा प्रकरण

इकाई-1.4 आंतरिक इन्द्रिय मन से व्यतिरिक्त आत्मा

खण्ड - 2 प्रमेय - आत्मनित्यत्व एवं इन्द्रियों के भौतिकत्व तथा नानात्व की परीक्षा

इकाई -2.1 चेतन आत्मा की नित्यता

इकाई -2.2 भूलोकीय शरीर पार्थिव (श्रुतिप्रमाण)

इकाई -2.3 इन्द्रियों के भौतिकत्व की परीक्षा

इकाई -2.4 इन्द्रियों का नानात्व

खण्ड - 3 बुद्धि (ज्ञान) की परीक्षा

इकाई -3.1 पृथिवी आदि द्रव्यों के गुणों का निरूपण

इकाई -3.2 बुद्धि (ज्ञान) की अनित्यता

इकाई -3.3 क्षणिकवाद निराकरण

इकाई -3.4 बुद्धि (ज्ञान) इन्द्रिय का गुण नहीं अपितु आत्मा का गुण है

खण्ड - 4 प्रेमय - आत्मा एवं मन का निरूपण

इकाई -4.1 बुद्धि (ज्ञान) की उत्पत्ति तथा विनाशशीलता

इकाई -4.2 चेतना आत्मा का गुण (धर्म)

इकाई –4.3 मन की परीक्षा

इकाई –4.4 आत्मा का विभिन्न शरीरों से संयोग अदृष्ट के कारण

CREDIT: -04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

परिणाम–

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी सूत्रों के सूत्रार्थ व भावार्थ करने में समर्थ हो जाता है।
2. आत्मा आदि छः प्रमेयों का तर्क एवं प्रमाण के माध्यम से विश्लेषण करने में दक्ष हो जाता है।
3. मन, बुद्धि, चेतना, इन्द्रिय आदि की परीक्षा के माध्यम से वास्तविक लक्ष्य का ज्ञान हो जाता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक– न्यायदर्शन– आचार्य उद्‌यवीर शास्त्री, आचार्य आनन्द प्रकाश, प्रकाशक–विजय कुमार, गोविंदराम, हासानन्द, 4408 नई सड़क, नई दिल्ली।

न्यायदर्शनम्– डॉ. साध्वी देवप्रिया, प्रकाशक– दिव्य प्रकाशन पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

Code - BDPHMJ – 302

न्याय दर्शन-३ (चतुर्थ एवं पंचम अध्याय)

उद्देश्य- 1. प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव, फल, दु:ख एवं अपवर्ग नामक छ: प्रमेयों से अवगत कराना।

2. विभिन्न बौद्धादि सिद्धान्तों की समीक्षा पूर्वक बोध कराना।

3. जाति एवं निग्रहस्थानों के उद्देश्य एवं लक्षणों का परिचय कराना।

खण्ड- 1 प्रमेय - प्रवृत्ति दोष प्रेत्यभाव की परीक्षा

इकाई–1.1 प्रवृत्ति की परीक्षा

इकाई–1.2 दोष त्रैराश्य प्रकरण

इकाई–1.3 प्रेत्यभाव की परीक्षा

इकाई–1.4 शून्यतावाद निराकरण

खण्ड- 2 अनिमित्तवाद आदि वादों का निराकरण

इकाई–2.1 जगत् का निमित्त कारण ईश्वर एवं अनिमित्तवाद प्रकरण

इकाई–2.2 सर्वानित्यत्ववाद एवं सर्वनित्यत्ववाद निराकरण

इकाई–2.3 सर्वपृथक्वाद एवं अभाववाद निराकरण

इकाई–2.4 संख्यैकान्तवाद निराकरण

खण्ड- 3 फल, दु:खादि प्रमेय एवं तत्त्वज्ञानोत्पत्ति निरूपण

इकाई–3.1 फल दु:ख तथा अपवर्ग परीक्षा

इकाई–3.2 तत्त्वज्ञानोत्पत्ति एवं अवयवी निरूपण

इकाई–3.3 परमाणु निरूपण एवं बाह्यार्थ भङ्ग निराकरण

इकाई–3.4 तत्त्वज्ञान विवृद्धि प्रकरण

इकाई–3.5 तत्त्वज्ञान परिपालन निरूपण

खण्ड- 4 जाति तथा निग्रहस्थान का परिचय

CREDIT: -04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

इकाई–4.1 विभिन्न जातियों के लक्षण

इकाई–4.2 षट्पक्षी निरुपण

इकाई–4.3 प्रतिज्ञाहानि से हेत्वाभास पर्यन्त 22 निग्रह स्थानों का उद्देश्य व परिभाषा

इकाई–4.4 अर्थान्तर निग्रहस्थान से हेत्वाभास पर्यन्त विभाग एवं निरुपण।

परिणाम- 1. सूत्रार्थ एवं भावार्थ पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है।

2. प्रवृत्ति, दोष इत्यादि छः प्रमेयों का तार्किक रूप से विश्लेषणात्मक ज्ञान हो जाता है।

3. विभिन्न दर्शनिक सिद्धान्तों का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन करने में बुद्धि कौशल प्राप्त हो जाता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- न्यायदर्शन, आचार्य उद्यवीर शास्त्री, प्रकाशक–विजय कुमार, गोविंदराम, हासानन्द, 4408 नई सड़क, नई दिल्ली।

न्यायदर्शनम्- डॉ. साध्वी देवप्रिया, प्रकाशक- दिव्य प्रकाशन पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

BDPHMN-303

CREDIT: -03
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

भाषाविज्ञान

खण्ड–1- भाषा विज्ञान का परिचय

इकाई–1- भाषा की परिभाषा, मानव भाषा

इकाई–2- मानवेतर भाषा, मानव–भाषा और मानवेतर भाषा में अन्तर

इकाई–3- भाषा के अभिलक्षण

इकाई–4- भाषा विज्ञान की शाखाएँ, भाषा विज्ञान का नाम

खण्ड–2- भाषा की उत्त्पत्ति के प्रमुख सिद्धान्त

इकाई–1- प्रत्यक्ष मार्ग- दैवी उत्पत्ति सिद्धान्त, विकासवादी सिद्धान्त, धातु सिद्धान्त, निर्णय सिद्धान्त, अनुकरण सिद्धान्त, मनोभावाभिव्यक्ति सिद्धान्त, यो–हे–हो सिद्धान्त, इंगित सिद्धान्त, टाटा सिद्धान्त, संगीत सिद्धान्त, सम्पर्क सिद्धान्त, समन्वित रूप

इकाई–2- परोक्ष मार्ग - बच्चों की भाषा, असभ्य जातियों की भाषा, आधुनिक भाषाओं का इतिहास, भाषा विकास के चरण- अभ्यंतर वर्ग, बाह्य वर्ग

इकाई–3- भाषा और बोली, भाषा के विविध रूप- मूल भाषा, व्यक्ति–बोली, उपबोली या स्थानीय बोली, बोलियों के बनने का कारण, बोलियों का महत्व

इकाई–4- अपभ्रंश की बोलिया तथा आधुनिक भाषाओं से सम्बन्ध, भाषा और बोली में अन्तर, भाषा की विशेषताएँ और प्रकृति

खण्ड–3- विश्व की भाषाएँ एवं उनका वर्गीकरण

इकाई–1- भाषाई वर्गीकरण का आधार, वैश्विक भाषा खण्ड, भारोपीय भाषा का क्षेत्र

इकाई–2- भारोपीय भाषा के अर्न्तगत भाषाएँ, भारोपीय परिवार का विभाजन

इकाई–3- केंतुम (किस्टिक) तथा सप्तम् (सप्तम)

इकाई–4- भारतीय एवं यूरोपीय भाषा विज्ञान का इतिहास।

BDPHID-304 (1)
संस्कृतसाहित्यम्-III

उद्देश्य-

- ''सुपां सुपा भवन्ति'' ''बहुलं छन्दसि'' आदि व्याकरण के वैदिक भाग का ज्ञान कराना।
- वेदों में प्रयुक्त होने वाले विशिष्ट प्रत्ययों का सामान्य दृगद्‌र्शन कराना

खण्ड- 1 व्याकरणनियमविषय (अष्टाध्यायी 1-4)

इकाई-1.1 अष्टाध्यायी (प्रथमोऽध्याय:)

इकाई-1.2 अष्टाध्यायी (द्वितीयोऽध्याय:)

इकाई-1.3 अष्टाध्यायी (तृतीयोऽध्याय:)

इकाई-1.4 अष्टाध्यायी (चतुर्थोऽध्याय:)

खण्ड- 2 व्याकरणनियमविषय (अष्टाध्यायी 1-4)

इकाई-2.1 अष्टाध्यायी (पञ्चमोऽध्याय:)

इकाई-2.2 अष्टाध्यायी (षष्ठोऽध्याय:)

इकाई-2.3 अष्टाध्यायी (सप्तमोऽध्याय:)

इकाई-2.4 अष्टाध्यायी (अष्टमोऽध्याय:)

खण्ड- 3 लिङ्गानुशासनं नाम पञ्चमं प्रकरणम्

इकाई-3.1 स्त्रीङ्गाधिकार:

इकाई-3.2 पुँल्लिङ्गाधिकार:

इकाई-3.3 नपुंसकाधिकार:

इकाई-3.4 अन्यलिङ्गाधिकार

खण्ड- 4 लिङ्गानुशासनशेष:

इकाई-4.1 स्त्र्यादिलिङ्गाधिकार:

इकाई–4.2	अथाऽलिङ्गकाः	39	CREDIT: -03 CA: 25 SEE: 75 MM: 100
इकाई–4.3	अजहल्लिङ्गकाः	40	
इकाई–4.4	अथभेदाल्लिङ्ग–भेदः	41	
इकाई–4.5	स्त्रीत्वं लोकात्	43	
इकाई–4.6	सामान्ये नपुंसकम्	44	

परिणाम–

1. वेद से सम्बद्ध व्याकरण के विशिष्ट नियमों से अवगत होकर वेदार्थ करने में सरलता अनुभव करता है।

2. वेद से सम्बद्ध विशिष्ट प्रत्ययों के अर्थ विषय में निर्भ्रान्त हो जाता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक– ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली 2012

व्याकरण चन्द्रोदय-3 –डॉ. आचार्या साध्वी देवप्रिया, प्रकाशक–दिव्यप्रकाशन हरिद्वार।

BDPHID-304 (2)

स्वर्णकाल का इतिहास

पाठ्यक्रम उद्देश्य-

गुप्त काल (लगभग 320-550 ईस्वी) का समालोचनात्मक अध्ययन करना तथा उसके राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और धार्मिक विकासों का विश्लेषण करते हुए, साथ ही विभिन्न ऐतिहासिक दृष्टिकोणों पर विचार करते हुए, भारतीय इतिहास में उसे 'स्वर्ण युग' कहे जाने की वैधता का मूल्यांकन करना।

खण्ड-1 स्वर्णकाल की अवधारणा

इकाई-1.1 गुप्त काल का संक्षिप्त परिचय

इकाई-1.2 सामाजिक परम्पराएं एवं शिक्षा का विकास

इकाई-1.3 आर्थिक सम्पन्नता का काल

इकाई-1.4 धाार्मिक समन्वय की नीति

खण्ड-2 कला एवं साहित्य

इकाई-2.1 मूर्ति कला का विकास

इकाई-2.2 मन्दिर स्थापत्य कला का विकास

इकाई-2.3 गुप्त कालीन संस्कृत साहित्य

इकाई-2.4 गुप्तकालीन अपभ्रंश साहित्य, बौद्ध साहित्य एवं जैन साहित्य

पाठ्यक्रम परिणाम-

विद्यार्थी सक्षम होंगे-

1. गुप्त वंश के प्रमुख शासकों की पहचान करने, उनके शासनकाल की समयरेखा को समझने तथा गुप्त साम्राज्य के उदय और पतन के कारणों का विश्लेषण करने में।

2. आर्थिक व्यवस्था: गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था की प्रकृति का विश्लेषण करने में, जिसमें कृषि पद्धतियाँ, आंतरिक एवं बाह्य व्यापारिक नेटवर्क, श्रेणियों की भूमिका तथा मुद्रा के महत्व का अध्ययन शामिल है।

3. सामाजिक संरचना: गुप्तकाल में प्रचलित सामाजिक पदानुक्रम को समझने में, जिसमें जाति व्यवस्था, महिलाओं की स्थिति तथा विभिन्न सामाजिक वर्गों के जीवन का अध्ययन शामिल है।

4. धार्मिक परिदृश्य: गुप्तकालीन धार्मिक वातावरण का वर्णन करने में, जिसमें हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान, बौद्ध एवं

जैन धर्म का संरक्षण तथा धार्मिक सहिष्णुता के सिद्धांत शामिल हैं।

CREDIT: -02
CA: 15
SEE: 35
MM: 50

5. सांस्कृतिक उपलब्धियाँ (कला एवं वास्तुकला): गुप्तकालीन कला (मूर्तिकला, चित्रकला, टेराकोटा) तथा वास्तुकला (मंदिर शैलियाँ) की प्रमुख विशेषताओं की पहचान एवं विश्लेषण करने में, जिसमें अजंता गुफाएँ तथा प्रारम्भिक हिन्दू मंदिर जैसे उदाहरण शामिल हैं।

6. सांस्कृतिक उपलब्धियाँ (साहित्य एवं भाषा): प्रमुख साहित्यकारों (जैसे कालिदास) एवं उनकी कृतियों को पहचानने, संस्कृत के राजभाषा के रूप में महत्व को समझने तथा शास्त्रीय संस्कृत साहित्य एवं नाटक के विकास का मूल्यांकन करने में।

BDPHAE-305
सरल-मानक-संस्कृतम्

पाठ्यक्रम-लक्ष्याः (Course Objectives)–

- शिक्षार्थिनः संस्कृतभाषया नित्यजीवनविषयेषु - स्वागतम्, परिचयः, सामान्यसामाजिकव्यवहाराः - सम्बन्धिनि संवादे सम्मिलितुं समर्थाः स्युः।
- संवादात्मकपरिस्थितिषु संस्कृतभाषायाः श्रवणसम्बद्धं बोधं वर्धयितुं समर्थाः स्युः।
- संस्कृतभाषायाः लेखनपठनबोधनकौशलानि विकसयितुं समर्थाः स्युः।

खण्ड-1: भाषा परिचयः, वाक्य रचना १

इकाई-1.1 संस्कृतभाषापचियः।

इकाई-1.2 स्वपरिचयः, सामान्यपदपरिचयः (नामपदम्, क्रियापदम्); वर्तमानकालः (प्रथमपुरुष, एकवचनम्, बहुवचनम्, उत्तमपुरुष, द्विवचनम्)

इकाई-1.3 - भविष्यत्कालः, भूतकालः, कालपरिवर्तनम्।

इकाई-1.4 - संख्या, समयः, देहाङ्गानि।

खण्ड-2: वाक्यरचना २, कथा-वाचनम्

इकाई-2.1 लिङ्गभेदः, विभक्तिभेदः, विशेषणम्।

इकाई-2.2 अव्ययम्, बन्धुवाचक-शब्दाः, दिनचर्या।

इकाई-2.3 प्रसङ्ग-वाचनम् (गुरुशिष्यसम्भाषणम्, मित्रसम्भाषणम् आदि)

इकाई-2.4 सरलसंस्कृतकथानां वाचनम्।

खण्ड-3: संस्कृतलेखनम् १

इकाई-3.1 वेदवेदाङ्गानां महत्वं, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।

इकाई-3.2 उपनिषदां महत्वम्, ईश्वरस्य स्वरूपम्।

इकाई-3.3 भारतं पञ्चमो वेदः, पुराण लक्षणम् तेषां महत्वं च।

इकाई-3.4 संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्, संस्कृतस्य रक्षार्थ प्रसारार्थ चोपायाः।

खण्ड-3: संस्कृतलेखनम् २

CREDIT: -03
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

इकाई–3.1 भारतीयदर्शनानां महत्वं वैशिष्ट्यं च, श्रीमद्भगवद्गीतायाः महत्त्वम्।

इकाई–3.2 नास्ति सांख्यसमं ज्ञानम्, एक सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति।

इकाई–3.3 नास्ति योगसमं बलम्, अष्टाङ्गयोगस्य महत्त्वम्।

इकाई–3.4 वैशेषिकदर्शने पदार्थविभागः, न्यायदर्शने प्रमाणमीमांसा।

परिणाम–

- छात्राः सरलसंवादं कर्तुं, प्रश्नान् प्रष्टुं उत्तरं च दातुं, सामाजिकप्रसङ्गेषु यथोचितं संस्कृतवाक्यप्रयोगं च कर्तुं शक्ष्यन्ति।
- छात्राः लघुश्रवणपाठान् ज्ञातुं, मुख्यसूचनां गृहीतुं, वार्तालापं च कर्तुं शक्ष्यन्ति।
- छात्राः सरलसंस्कृते विविधविषयेषु लिखनं लिखितुं शक्ष्यन्ति।

BDPHSE- 306 (1)

CREDIT: -03
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

सस्वरवेदपाठः

उद्देश्य–

- वेदों की रक्षा करना।
- वेद, वेदो का विषय और वेदों के ऋषियों से लाभान्वित् होगें।
- वेद पाठ के हर प्रकार के पाठों से अवगत् कराना।
- अक्षरों (वर्णो) उच्चारण का सम्यक बोध कराना।

खण्ड–1

इकाई–1.1 वैदिक वाङ्मय परिचय

इकाई–1.2 वेदो के ऋषियों, छन्द एवं देवताओं के स्वरूप का परिचय।

इकाई–1.3 वेदों के मुख्य विषयों का परिचय।

इकाई–1.4 वेद पाठ के आठ प्रकार के पाठों (जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वजा, दण्ड, रथ, घन) से अवगत कराना।

इकाई–1.5 मुख्य सूक्तों का परिचय (अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी, बृहस्पति, स्वस्तिवाचन, पुरुषसूक्त, नासदीयसूक्त, शान्तिकरण श्रद्धा, संगठन एवं दिनचर्या मन्त्रों का सस्वर उच्चारण)

खण्ड–2

इकाई–2.1 ऋग्वेदीय अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या। पुराने पाठ का आवृत्ति।

खण्ड–3

इकाई–3.1 पुरुष सुक्त नासदीय सूक्त, बृहस्पति सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या। पुराने पाठ का आवृत्ति।

खण्ड–4

इकाई–4.1 कृष्ण युजर्वेदीय तैत्तीरीय आरण्यक मंत्रपुष्पम् का परिचय।

इकाई–4.2 पुराने पाठ का आवृत्ति।

इकाई–4.3 मन्त्रपुष्पम् का पाठ एवं कण्ठस्थ अर्थ सहित व्याख्या।

इकाई–4.4 स्वस्तिवाचन शांतिकरण एवं दिनचर्यामंत्रो का सस्वर उच्चारण।

इकाई–4.5 संगठन सूक्त के प्रतिदिन एक–एक मंत्र का अर्थ बोध।

परिणाम–

- वेद पाठ के प्रकारों (पाठों) का बोध होगा।
- अग्नि,वायु, सस्वर, पाठ एवं अर्थ बोध।
- वैदिक वाङ्मय के विषय मे ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- एकाग्रता बढ़ती है, सात्विक हारमोन्स पैदा होने से अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञान का एवं आनन्दमय अस्तित्व पुष्ट एवं प्रसन्न होता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक– वैदिक सुक्त मञ्जरी, मुद्रक–ऋषि ऑफसैट प्रिन्टर्स, ज्वालापुर हरिद्वार।

BDPHSE-306 (2)

यज्ञविज्ञानम्

उद्देश्यः-

- यज्ञ के स्वरूप एवं उसके ऐतिहासिक तथ्यों से अवगत कराना।
- यज्ञ के व्यावहारिक, वैज्ञानिक एवं पारमार्थिक पक्षों का ज्ञान कराना।
- यज्ञ-चिकित्सा का बोध कराना।

खण्ड-1

इकाई-1

- **यज्ञशब्द के अर्थ एवं निर्वचन**
- **यज्ञ के प्रकार**
- **यज्ञों के क्रम**
- **अग्निहोत्र-विधानकाल**

इकाई-2

- **यज्ञीय पदार्थ**
- **हविर्द्रव्यों की मात्राएँ**
- **मन्त्र**
- **यज्ञ-महिमा**
- **यज्ञाग्नि महत्त्व**
- **अन्य घटक**

खण्ड-2

इकाई-1

- **पञ्च महायज्ञ**
- **ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्योपासना)**
- **देवयज्ञ (अग्निहोत्र)**
- **पितृयज्ञ-विधि**
- **बलिवैश्वदेवयज्ञ-विधि**
- **अतिथियज्ञ-विधि**

खण्ड-3

इकाई-1

- **यज्ञ से भूमि-शोधन**
- **यज्ञ से वायु-शोधन**
- **यज्ञ से जल-शुद्धि**

इकाई–2

CREDIT: -05
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

- ❖ **यज्ञ से प्रदूषण निवारण**
- ❖ **यज्ञ का इतिहास**
- ❖ **यज्ञ का आध्यात्मिक पक्ष**

खण्ड–4

इकाई–1

- ❖ **यज्ञ चिकित्सा**
- ❖ **रोगानुसार हवन सामग्री**
- ❖ **हवन सामग्री पर अनुभूत शोध**
- ❖ **आयुर्वेदिक धूम चिकित्सापाठ्यपुस्तक-**

- ➤ श्रोत यज्ञों का संक्षिप्त परिचय। लेखक– पं.युधिष्ठिर मीमांसक।
- ➤ यज्ञ योग आयुर्वेद चिकित्सा। लेखक– प.पू.स्वामी रामदेव जी महाराज।
- ➤ वैदिक नित्यकर्म विधि। लेखक– प.पू.स्वामी रामदेव जी महाराज।

परिणाम–

- ➤ यज्ञ से सामान्य रूप से रोगों के निदान में समर्थता प्राप्त होगी।
- ➤ यज्ञ एवं योग को समग्र चिकित्सा के रूप में उपयोग एवं विनियोग करने में कुशल होगें।

Semester -IV
BDPHMJ-401
वैशेषिक दर्शन पूर्व

उद्देश्य- 1. वैशेषिक दर्शन के अर्थ से अवगत कराना।

2. द्रव्यादि षट् पदार्थों के उद्द्देश्य एवं लक्षण से अवगत कराना।

3. नौ द्रव्यों एवं पांच कर्मों का विस्तृत ज्ञान प्रदान कराना।

खण्ड-1

इकाई-1.1 वैशेषिक का नामकरण

इकाई-1.2 धर्म का स्वरूप एवं लक्षण

इकाई-1.3 षड्पदार्थों का सामान्य परिचय

इकाई-1.4 द्रव्य-गुण एवं कर्म के भेद

इकाई-1.5 द्रव्य-गुण एवं कर्म के लक्षण

इकाई-1.6 द्रव्य-गुण-कर्म का परस्पर साधर्म्य

इकाई-1.7 सामान्य एवं विशेष नामक पदार्थ

इकाई-1.8 द्रव्य-गुण कर्म से सत्ता का भिन्नत्व

इकाई-1.9 सत्ता का नित्यत्व एवं एकत्व

इकाई-1.10 द्रव्यत्व, गुणत्व, कर्मत्व का द्रव्य, गुण, कर्म से भिन्नत्व

इकाई-1.11 'विशेष' नामक पदार्थ

खण्ड-2

इकाई-2.1 पृथिवी का लक्षण

इकाई-2.2 जल का लक्षण

इकाई-2.3 तेज का लक्षण

इकाई-2.4 वायु का लक्षण

इकाई–2.5 परमाणुरूप वायु का द्रव्यत्व एवं नित्यत्व

इकाई–2.6 आकाश का लक्षण

इकाई–2.7 आकाश का द्रव्यत्व एवं नित्यत्व

इकाई–2.8 'काल' नामक द्रव्य का लक्षण

इकाई–2.9 व्यवहार की दृष्टि से काल के भेद

इकाई–2.10 काल का द्रव्यत्व, नित्यत्व एवं एकत्व

इकाई–2.11 दिशा नामक द्रव्य का लक्षण

इकाई–2.12 दिशा का द्रव्यत्व, नित्यत्व एवं एकत्व

इकाई–2.13 दिशा का व्यावहारिक नानात्व

खण्ड–3

इकाई–3.1 आत्मतत्त्व की सिद्धि में हेतु

इकाई–3.2 देहादि से भिन्न आत्मा की सिद्धि में विभिन्न साधक लिङ्गों का वर्णन

इकाई–3.3 आत्मा के गुणों का वर्णन

इकाई–3.4 आत्मा के द्रव्यत्व, नित्यत्व एवं नानात्व की सिद्धि

खण्ड–4

इकाई–4.1 पृथिव्यादि चारों भूतों के कार्य

इकाई–4.2 शरीर के पाञ्चभौतिकत्व एवं त्रिभौतिकत्व का निषेध

इकाई–4.3 शरीर के भेद

इकाई–4.4 अयोनिज शरीर की उत्पत्ति में हेतु

खण्ड–5

इकाई–5.1 प्रयत्नपूर्वक होने वाले कर्म

इकाई–5.2 प्रयत्नपूर्वक होने वाले कर्म

इकाई–5.3 कर्म का नानात्व एवं वेग नामक संस्कार का एकत्व

इकाई–5.4 पृथिव्यादि चारों भूतों एवं मन में होने वाले कर्मों का विवेचन

इकाई–5.5 वैशेषिकदर्शनानुसार मोक्ष का स्वरूप।

CREDIT: -05
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

परिणाम–

1. वैशेषिक दर्शन के सूत्रों को शुद्धतापूर्वक स्मरण करके वाचन में विद्यार्थी समर्थ हो जाता है।
2. प्रथम पांचों अध्यायों के सूत्रों के अर्थ एवं व्याख्यान करने में दक्ष हो जाता है।
3. द्रव्यादि षट् पदार्थों का सामान्यज्ञान एवं नौ द्रव्यों तथा पांच कर्मों का विशेष ज्ञान अर्जित कर लेता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक– वैशेषिक दर्शन– आचार्य उदयवीरशास्त्री, प्रकाशक–गोविन्दराम हासानन्द, वैशेषिक दर्शन–आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक–आर्श–शोध–संस्थान अलियाबाद।

वैशेषिक दर्शन– डॉ.साध्वी देवप्रिया,प्रकाशक–दिव्यप्रकाशन, हरिद्वार।

BDPHMJ-402

सांख्यदर्शनम् पूर्वार्द्ध

उद्देश्यः-

- सांख्य दर्शन में त्रिविध दुःख, त्रिविध प्रमाण देहात्मवाद आदि विशयों से परिचित कराना।
- प्रधाान के कार्य एवं ज्ञान और वैराग्य की महिमा से अवगत कराना।
- प्रथम तीन अधयायों (तन्त्राध्याय, प्रधानकार्याध्याय, वैराग्याध्याय) के सूत्रर्थ एवं भावार्थ का बोध कराना।

खण्ड-1 सांख्य तत्व का प्रतिपादन

इकाई-1.1 त्रिविध दुःख विवेचन

इकाई-1.2 प्रमाण सामान्य लक्षण

इकाई-1.3 जीवात्मा का अस्तित्व

इकाई-1.4 सृष्टि का अभिव्यक्तिवाद

खण्ड-2 प्रकृति की प्रवृत्ति का निरूपण

इकाई-2.1 आत्मा बहुत्व निरूपण

इकाई-2.2 प्रकृति की उपादानता

इकाई-2.3 इन्द्रियों का आहंकारिकत्व

इकाई-2.4 ईश्वर का अस्तित्च प्रकरण

खण्ड-3 सूक्ष्म एवं स्थूल तत्वों का प्रतिपादन

इकाई-3.1 मन का स्वरूप

इकाई-3.2 भूत-चैतन्य विचार

इकाई-3.3 आत्मज्ञान के साधन

इकाई-3.4 ईश्वर फल प्रदाता

खण्ड-4 ज्ञान एवं वैराग्य का महत्व

इकाई-4.1 अचेतन करणों का संसरण

इकाई-4.2 प्रत्यय सर्ग निरूपण

इकाई–4.3 भौतिक सर्ग निरूपण

इकाई–4.4 बन्ध–मोक्ष निरूपण

CREDIT: -04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

परिणाम–

- सांख्य दर्शन में त्रिविध दुःख त्रिविध प्रमाण देहात्मवाद आदि विशयों से परिचित हो जाता है।
- प्रधाान के कार्य एवं ज्ञान और वैराग्य की महिमा से अवगत हो जाता है।
- प्रथम तीन अधयायों (तन्त्राध्याय, प्रधानकार्याध्याय वैराग्याधयाय) के सूत्रर्थ एवं भावार्थ का बोध हो जाता है।
- सांख्य के समग्र शास्त्रों का विश्लेषण करने में सक्षम हो जाता है।

सहायक ग्रन्थ– 1. सांख्यदर्शनम्, आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशन– आर्ष विद्या प्रचार न्यास।

2. सांख्यदर्शनम् स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक, विद्यामार्तण्ड, प्रकाशक– सत्यधार्म प्रकाशन।

3. सांख्यकारिका (श्रीमदीश्वरकृष्णविरचिता), आचार्य–जगन्नाथ शास्त्री, प्रकाशक–मोतीलाल बनारसीदास।

BDPHMJ-403

सांख्यदर्शनम् (उत्तरार्द्ध)

उद्देश्यः-

- सांख्यदर्शन के आख्यायिकाध्याय के सूत्रार्थ एवं भावार्थ से अवगत कराना।
- सांख्यदर्शन के परपक्षनिर्जयाध्याय के सूत्रार्थ एवं भावार्थ से अवगत कराना।
- सांख्यदर्शन के तन्त्राध्याय के सूत्रार्थ एवं भावार्थ से अवगत कराना।

खण्ड-1 आख्यायिकाओं के माधयम से विवेकज्ञान के साधनों का निर्देशन

इकाई-1.1 तत्त्वोपदेश

इकाई-1.2 त्याग की महिमा

इकाई-1.3 आत्मजिज्ञासु के लिये असाधन के चिन्तन का निषेध

इकाई-1.4 समाधिलाभ हेतु एकाग्रता की आवश्यकता

खण्ड-2 उपासक के लिए विवेक ज्ञान के साधन

इकाई-2.1 निदिध्यासन का माहात्म्य

इकाई-2.2 ग्राह्य का ग्रहण तथा हेय का त्याग

इकाई-2.2 उपासना में चित्त की निर्मलता आवश्यक

इकाई-2.3 ईश्वर का अधिष्ठातृत्व

खण्ड-3 लिंगादि का स्वरूप

इकाई-3.1 अविद्या का स्वरूप

इकाई-3.2 धर्मादि भाव अन्तः करण के धर्म

इकाई-3.3 लिङ्ग (अनुमान) का स्वरूप

इकाई-3.4 शक्तिग्रह के निमित्त

खण्ड-4 वेदों का अपौरुषेयत्व

इकाई-4.1 वेद 'अपौरुषेय' है

इकाई-4.2 कार्य कारण में विद्यमान रहता है। (सत्कार्यवाद)

इकाई-4.3 अविवेक नाश के उपाय

इकाई-4.4 जीवात्मा की कार्यनिष्पत्ति का अधिष्ठाता

परिणामः-

CREDIT: -04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

- उपर्युक्त अध्यायों के सूत्रार्थ एवं भावार्थ का विश्लेषण करने में समर्थ हो जाता है।
- सांख्यसिद्धान्तों के विस्तृत एवं प्रामाणिक ज्ञान कौशल को प्राप्त कर लेता है।
- विभिन्न सिद्धान्तों के तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक विश्लेषण में कुशल हो जाता है।

निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ- सांख्यदर्शनम्, दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

सहायक ग्रन्थ- सांख्यदर्शन- आचार्य उदयवीर शास्त्री।, प्रकाशक-विजयकुमार, गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली- 110006, सांख्यदर्शनम् - स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक, विद्यामार्तण्ड (हिन्दी अनुवाद), प्रकाशक-सत्यधर्म प्रकाशन।

BDPHMN-404

संस्कृत-व्याकरणम्

उद्देश्य-

- कृत प्रत्ययों का परिचय कराना।
- उणादि प्रत्ययों का परिचय कराना।
- कृतादि प्रत्ययों का प्रयोगात्मक ज्ञान।

खण्ड-1 कृत्य तथा सोपपद कृत् प्रकरणम्

इकाई-1.1 कृत्य प्रक्रिया

इकाई-1.2 कृत्य प्रयोग, तव्य प्रत्ययान्त रूप

इकाई-1.3 अनीयर्, कर्तृ वाचक कृत्

इकाई-1.4 सोपपद् कृत्, मूलविभुजादि

खण्ड-2 निष्ठा, शतृ-शानच्, तुमुन् प्रत्ययान्त

इकाई-2.1 निष्ठा प्रत्यय तथा रूप

इकाई-2.2 शतृ-शानच् प्रत्यय

इकाई-2.3 तुमुन् प्रत्यय

खण्ड-3 भाव वाचक, स्त्र्यधिकारोक्त, क्त्वा, ल्यप् प्रत्ययान्त

इकाई-3.1 भाववाचक तथा कर्तृ-भिन्न कारक वाचक कृत्

इकाई-3.2 स्त्र्यधिकारोक्त कृत्

इकाई-3.3 क्त्वा, ल्यप् प्रत्यय तथा रूप

खण्ड-4 उत्सर्गापवाद, उणादि प्रत्ययः

इकाई-4.1 उत्सर्गापवाद बाध्य-बाधक भाव-व्याकरण

इकाई-4.2 उणादि प्रत्यय, उणादि कोश-प्रथम पाद

इकाई-4.3 उणादि कोश - द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ पाद

CREDIT: -02
CA: 15
SEE: 35
MM: 50

परिणाम–

- कृत प्रत्ययों का बोध ।
- उणादि प्रत्ययों का विशिष्ट बोध।
- कृतादि प्रत्ययों का प्रयोगात्मक अवबोध।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक– व्याकरण चन्द्रोदय–5, डॉ. आचार्या साध्वी देवप्रिया, प्रकाशन–दिव्य प्रकाशन हरिद्वार।

Course Code: BDPHAE-405
Introduction to Journalism and Mass Communication

CREDIT: -04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

BLOCK I: UNDERSTANDING COMMUNICATION

UNIT 1 Basics of Communication

UNIT 2 Ancient Indian Communication Systems

UNIT 3 Types of Communication

UNIT 4 Functions and Barriers to Communication

BLOCK II: FOUNDATIONS OF JOURNALISM

UNIT 5 Introduction to Journalism

UNIT 6 Historical Overview of Journalism in India

UNIT 7 Principles of Journalism

UNIT 8 Journalism and Democracy

BLOCK III: EXPLORING MASS COMMUNICATION AND MEDIA IMPACT

UNIT 9 Introduction to Mass Communication

UNIT 10 Types of Mass Media

UNIT 11 Media Convergence and New Media Technologies

UNIT 12 Media and Society

BLOCK IV: MEDIA LAWS, ETHICS, AND PRACTICAL INSIGHTS

UNIT 13 Introduction to Media Laws in India

UNIT 14 Media Ethics

UNIT 15 Freedom of Press and Media Literacy

UNIT 16 Hands-on Learning and Emerging Media

Semester-V
BDPHMJ-501
वेदान्त दर्शन पूर्वार्द्ध

उद्देश्य–

- ब्रह्म की उपासना विविध अध्यात्म ग्रन्थों में वर्णित परिचय कराना।
- ब्रह्म जगत् एवं जीवात्मा के प्रति निमित्त कारणत्व सिद्ध कराना।
- वेदाध्ययन में मनुष्य मात्र का अधिकार एवं जगत् उत्पत्ति में प्रकृति का उपादान कारणत्व सिद्ध कराना।
- ब्रह्म जगत् एवं जीवात्मा के स्वरूप का बोध करना।

खण्ड–1

इकाई : 1.1 ब्रह्म जिज्ञासा व ब्रह्म का स्वरूप एवं जगत उत्पत्ति में ब्रह्म निमित्तकारण

इकाई : 1.2 उपनिषदों में भिन्न–भिन्न नामों से ब्रह्मोपासना।

इकाई : 1.3 ब्रह्मात्मा का भोक्तृत्वाभाव एवं हृदयगुहा में ब्रह्मात्मा की प्राप्ति।

इकाई : 1.4 वैष्ठवानर ब्रह्म का विराट स्वरूप।

खण्ड–2

इकाई : 2.1 द्यु, भू आदि का आश्रय ब्रह्मात्मा।

इकाई : 2.2 मनुष्य मात्र को ब्रह्मसाक्षात्कार का अधिाकार।

इकाई : 2.3 वेदाध्ययन में शूद्रों का भी अधिाकार।

इकाई : 2.4 जगत की उत्पत्ति में ब्रह्म स्वतन्त्र होने से निमित्तकारण।

खण्ड–3

इकाई : 3.1 जगत की उत्पत्ति में जीव के कारणत्व का निषेधा।

इकाई : 3.2 ब्रह्माश्रित प्रकृति जगदुत्पत्ति में उपादानकारण।

इकाई : 3.3 प्रकृति के स्वतन्त्र कारणत्व का निषेधा।

इकाई : 3.4 जगदुत्पत्ति में भिन्न भिन्न वादों के कारण प्रदर्ष्ठान का खण्डन।

खण्ड–4

इकाई : 4.1 जीवात्मा उत्पत्तिधर्मरहित नित्य ज्ञानवान और भोक्ता।

इकाई : 4.2 जीवात्मा में अणुत्व का प्रदर्शन एवं विभुत्व का निषेधा।

इकाई : 4.3 जीवात्मा का कर्त्ताभाव एवं जीवात्मा परमात्मा का अंश है।

इकाई : 4.4 उपनिषदों में इन्द्रियों की उत्पत्ति।

परिणाम-

CREDIT: -04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

- ब्रह्म उपासना की विविध विधियों का परिचय।
- ब्रह्म के जगत के प्रति निमित कारण बताना।

सहायक पाठ्यपुस्तक- ब्रह्मसूत्र, आचार्य उदयवीर शास्त्री। प्रकाशक-विजयकुमार, गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली- 110006, वेदान्तदर्शन लेखक-स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक प्रकाशक- विजयकुमार, गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली- 110006

BDPHMJ-502

वेदान्त दर्शन उत्तरार्ध

उद्देश्य-

- वेदान्तदर्शन के प्रकरण के अनुसार सूत्रार्थो से परिचय कराना।
- प्रकरणगत सूत्रों को कण्ठस्थ कराना।
- ब्रह्म की उपासना का वैदिक स्वरूप परिचय।

खण्ड-1

इकाई- 1.1 जीवात्मा का सूक्ष्म शरीर के साथ निकलना।

इकाई- 1.2 जीवात्मा का पुनर्जन्म।

इकाई- 1.3 जीवात्मा का जागृत स्वप्नादि अवस्थाओं की प्राप्ति।

इकाई- 1.4 ब्रह्म रूपादि रहित है एवं ब्रह्म की उपलब्धि।

खण्ड-2

इकाई- 2.1 जीवात्मा के कर्मफलदाता ब्रह्मात्मा

इकाई- 2.2 उपनिषद् ग्रन्थों में एक ही बह्म उपास्य है।

इकाई- 2.3 उपसंहार करने योग्य परमात्मागुण।

इकाई- 2.4 मुमुक्षु का आवश्यक अनुष्ठान शमदमादि।

खण्ड-3

इकाई- 3.1 मोक्ष के लिए अनेक जन्मों का प्रतिबन्ध नहीं।

इकाई- 3.2 ब्रह्मजिज्ञासा कब तक करें?

इकाई- 3.3 ब्रह्मोपासन में आसनादि का अभ्यास।

इकाई- 3.4 इन्द्रियों का लयक्रम।

खण्ड-4

इकाई- 4.1 ब्रह्मोपासक का निष्क्रमण और रश्मियों का अनुसरण।

इकाई- 4.2 मुक्तात्मा का देवयान मार्ग द्वारा ब्रह्म के प्रति गमन।

इकाई- 4.3 मुक्तात्मा का अपने स्वरूप की प्राप्ति।

इकाई- 4.4 मोक्षावस्था में सूक्ष्मशरीर की वर्तमानता व स्थूल शरीर का अभाव।

परिणाम-

CREDIT: -04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

- जीवात्मा के साथ सूक्ष्म शरीर का परिचय कराना।
- परमात्मा के जागृत आदि अवस्थाओं का विवरण देना।
- देवत्व मार्ग का निरूपण।

सहायक पाठ्यपुस्तक- ब्रह्मसूत्र, आचार्य उदयवीर शास्त्री। प्रकाशक-विजयकुमार, गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली- 110006, वेदान्तदर्शन लेखक-स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक प्रकाशक- विजयकुमार, गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली- 110006

BDPHMJ-503
तर्कसंग्रह एवं वैशेषिक दर्शन उत्तरार्ध

उद्देश्य-

1. तर्कसंग्रह के सप्तपदार्थ एवं प्रमाण विमर्श से अवगत कराना।
2. वैशेषिक के छठे अध्याय से दसवें अध्याय तक के सूत्रों के सूत्रार्थ एवं भावार्थ से अवगत कराना।
3. वैदिक कर्मों एवं चौबीस गुणों का विस्तृत ज्ञान कराना

खण्ड- 1 तर्कसंग्रह

इकाई-1.1 सप्तपदार्थ निरूपण

इकाई-1.2 प्रमाण मीमांसा प्रकरण

इकाई-1.3 प्रत्यक्ष प्रमाण

इकाई-1.4 अनुमान प्रमाण

इकाई-1.5 उपमान प्रमाण

इकाई-1.6 शब्द प्रमाण

खण्ड-2 षष्ठम् अध्याय-वैशेषिक दर्शन

इकाई-2.1 वेद का प्रमाणत्व

इकाई-2.2 शुचि एवं अशुचि भोजन

इकाई-2.3 महर्षि कणाद द्वारा वर्णित अदृष्टोत्पादक कर्म

इकाई-2.4 शुचि व अशुचि द्रव्य

इकाई-2.5 रागोत्पत्ति के विभिन्न कारण

खण्ड-3 सप्तमाध्याय-

इकाई-3.1 पृथिव्यादि द्रव्यों की परीक्षा

इकाई-3.2 रूपादि गुणों की परीक्षा

इकाई-3.3 परिमाण प्रकरणम्

इकाई-3.4 समवाय नामक पदार्थ

खण्ड-4 अष्टमाध्याय-

इकाई-4.1 द्रव्यादि ज्ञान के कारण, द्रव्यज्ञान, गुणज्ञान एवं कर्मज्ञान के कारण

इकाई–4.2 सांकेतिक ज्ञान के कारण

CREDIT: -04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

इकाई–4.3 शरीर एवं इन्द्रियों की प्रकृति/कारण

खण्ड–5 नवमाध्याय–अभाव के स्वरूप एवं प्रकार

इकाई–5.1 अभाव के प्रत्यक्ष होने के कारण

इकाई–5.2 योगियों का आन्तरिक प्रत्यक्ष

इकाई–5.3 विद्या एवं अविद्या के स्वरूप

खण्ड–6 दशमाध्याय–

इकाई–6.1 सुख एवं दु:ख का परस्पर अर्थान्तरभाव, सुख एवं दु:ख के परस्पर कारण भेद, सुख एवं दु:ख के परस्पर कार्यभेद

इकाई–6.2 वैशेषिकदर्शनानुसार कारण एवं कार्य की परिभाषा एवं कारण का भेद (समवायिकारण, असमवायिकारण, निमित्तकारण)।

परिणाम–

1. वैशेषिक दर्शन के अंतिम पांच अध्यायों के सूत्रार्थ एवं भावार्थ करने में समर्थ हो जाता है।
2. वैशेषिक दर्शन के वैदिक कर्मो एवं चौबीस गुणों का विस्तृत ज्ञान अर्जित कर लेता है।
3. तर्कसंग्रह के सप्त पदार्थो का विशेषज्ञान से युक्त हो जाता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक– वैशेषिक दर्शन– आचार्य उदयवीरशास्त्री, प्रकाशक–गोविन्दराम हासानन्द

वैशेषिक दर्शन–आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक–आर्ष–शोध–संस्थान अलियाबाद

वैशेषिक दर्शन– डॉ.साध्वी देवप्रिया,प्रकाशक–दिव्यप्रकाशन, हरिद्वार।

तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य चौखम्बा सूरभारती प्रकाशन, वाराणासी।

•

BDPHMN-504

वैदिक साहित्य

उद्देश्य-

1. ऐतरीय एवं तैत्तरीय उपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद् व श्वेताश्वतरोपनिषद् के प्रसिद्ध प्रकरणों से अवगत कराना।

2. उपरोक्त उपनिषदों के सृष्टि रचना प्रक्रिया, शिक्षावल्ली (दीक्षांत भाषण) भृगुवल्ली (पंचकोश तथा ब्रह्म), ब्रह्मज्ञानी सत्यकाम की कथा, याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद, योग प्रणायाम का वर्णन एवं उसका फल इत्यादि प्रकरणों का प्रामाणिक ज्ञान कराना।

खण्ड-1 ऐतरीय एवं तैत्तरीय उपनिषद्

इकाई-1.1 सृष्टि रचना प्रक्रिया

इकाई-1.2 आत्मा का निष्क्रमण

इकाई-1.3 शिक्षावल्ली (दीक्षांत भाषण)

इकाई-1.4 भृगुवल्ली (पंचकोश तथा ब्रह्म

खण्ड-2 छान्दोग्योपनिषद्

इकाई-2.1 उद्गीथ एवं ओंकार की उपासना एवं मर्म,गायत्री महिमा

इकाई-2.2 नारद- सनतकुमार संवाद

इकाई-2.3 ब्रह्मज्ञानी सत्यकाम की कथा

इकाई-2.4 प्राण तथा इन्द्रियों का विवाद

खण्ड-3 बृहदारण्यकोपनिषद्

इकाई-3.1 जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति अवस्था

इकाई-3.2 तीन एषणाएँ एवं पुनर्जन्म वर्णन आदि वर्णन

इकाई-3.3 याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद

इकाई-3.4 प्रजापति का द-द-द का उपदेश

खण्ड-4 श्वेताश्वतरोपनिषद्

इकाई-4.1 जीवन एक नदी का प्रवाह

इकाई–4.2   योग प्रणायाम का वर्णन एवं उसका फल

इकाई–4.3   भगवान् की स्तुति, जीवात्मा का वर्णन

इकाई–4.4   निष्काम–कर्म का सिद्धान्त

CREDIT: -04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

परिणाम–

उपरोक्त पांचों उपनिषदों के सृष्टि रचना प्रक्रिया, शिक्षावल्ली (दीक्षांत भाषण) भृगुवल्ली (पंचकोश तथा ब्रह्म), ब्रह्मज्ञानी सत्यकाम की कथा, याज्ञवल्क्य–मैत्रेयी संवाद, योग प्रणायाम का वर्णन एवं उसका फल इत्यादि प्रकरणों का प्रामाणिक बोधपूर्वक विस्तृत व्याख्यान कौशल से युक्त हो जाता।

सहायक ग्रन्थ– 1. एकादशोपनिषद, डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार जी, प्रकाशक– विजयकृष्ण लखनपाल–डब्ल्यू–77 ए, ग्रेटर कैलाश–1, नई दिल्ली–48

2. उपनिषद् संदेश, प्रकाशक– दिव्य प्रकाशन पतंजलि योगपीठ महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग–58, निकट– बहादराबाद, हरिद्वार– 249405 (उत्तराखण्ड)।

BDPHSE – 505

YOG AYURVED PRAKRITIK

CHIKITSA PRASHIKSHAN

Course Objectives:

1. **Clinical Exposure:** To provide hands-on experience in the clinical application of naturopathy and Panchakarma therapies.
2. **Patient Management:** To train interns in patient evaluation, case history taking, diagnosis, therapy planning, and follow-up care.
3. **Therapeutic Proficiency:** To develop skill in administering core naturopathy therapies (hydrotherapy, mud therapy, massage, fasting, diet) and classical Panchakarma procedures.
4. **Integrative Understanding:** To facilitate understanding of how yoga, physiotherapy, acupuncture, chromotherapy, and other supportive therapies integrate with naturopathy and Panchakarma.

Block– 1

- **Naturopathy Therapies -1 , Acupressure & Vaatmokshan , Exercise therapy Electrotherapy.**

S.No.	Name of Therapies	Minimum Number of practices
1.1	Scientific Massage Therapy	10 Full Body Massage (FBM) & 20 Partial Massage (PM)
1.2	Mud Bath & Mud Packs	2 Full Body Mud Bath (FBMB) 20 Preparation of Eye pack and Abdomen Pack (EP+AP)
1.3	Colour Thermoliam & GHT	2 Each
1.4	Foot and Arm Bath	Any 20
1.5	Full Wet Sheet Pack	5

Block – 2

- **Naturopathy Therapies -2 , Acupuncture, Singhi, Ozone Therapy, Wax Therapy**

S.No.	Name of Therapies	Minimum Number of practices
2.1	Hip Bath	Any 2
2.2	Jacuzzi ,3 in 1 Bath & Whirl-pool	10 Each
2.3	Sand Bath	Any 5
2.4	Sauna, Steam Bath & Local Steam	20 Each
2.5	Hot Cold Compress or Packs	30 ach

Block – 3

- **Panchakarma Therapies -1 and Therapeutic Diet Preparation, Disease Wise Yoga Protocol ,Trataka ,Jalneti ,Rubbernati & Eye wash.**

Panchkarma Therapies		
S.No.	**Name of Therapies**	**Minimum Number of practices**
3.1	Shirodhara & Snehdhara	20 Each
3.2	Akshitarpan	Any 15
3.3	Karnpooran	15
3.4	Nasyam	Any 20
3.5	Abhyanga, Udvardtan & Patra Pind Swedan	20 Each

Block – 4

CREDIT: -04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

- **Panchakarma Therapies - 2 Yoga and shatkarma , Yajna therapy , Sankaprak-shaalan, Basti.**

Panchkarma Therapies		
S.No.	**Name of Therapies**	**Minimum Number of prac-tices**
4.1	Sarvang Vashpa Swedan & Nadi swedan	25 Each
4.2	Janu Basti, Kati Basti, Hradiya Basti & Gharibha Basti	10 Each
4.3	Raktamokshana & leach	Any 5
4.4	Niruha Basti & Matra Basti	20 Each

Course Outcomes:

1. Demonstrate proficiency in performing naturopathy treatments and Panchakarma therapies under supervision.
2. Independently manage basic cases, including treatment planning, execution, and patient counseling.
3. Integrate supportive therapies like yoga therapy, physiotherapy, dietetics, and chromotherapy in clinical protocols.
4. Maintain clinical records including case sheets, progress notes, therapy charts, and patient feedback systematically.

Apply theoretical knowledge into practical clinical settings confidently and ethically.

Semester- VI

BDPHMJ-601

मीमांसा ज्योतिष्यपरिचयञ्च

उद्देश्य-

1. मीमांसा दर्शन का बोध।
2. मीमांसा दर्शन के आचार्यों का ज्ञान।
3. ज्योतिष्य का सामान्य परिचय कराना।
4. कुण्डली निर्माण इत्यादि का बोध कराना।

खण्ड-1 मीमांसा दर्शन।

इकाई-1.1 धर्मजिज्ञासाधिकरणम्, धर्मलक्षणाधिकरणम्,

इकाई-1.2 धर्मे प्रामाण्यपरीक्षाधिकरणम्, धर्मस्य प्रत्यक्षाद्यगम्यत्वाधिकरणम,

इकाई-1.3 चोदनाप्रामाण्याधिकरणम्, शब्दनित्यत्वाधिकरणम्,

इकाई-1.4 पदार्थमूलतया वाक्यार्थप्रामाण्याधिकारणम्, वेदाऽपौरुषेयत्वाधिकरणम्

खण्ड-2 ज्योतिष का सामान्य परिचय कराना।

इकाई-2.1 ज्योतिष शास्त्र का परिचय ज्योतिष शास्त्र के भेद, सिद्धान्त, संहिता, होरा, वास्तु, रमल, प्रश्न, शकुन, ताजिकादि का परिचय।

इकाई-2.2 ज्योतिषशास्त्र के प्रमुख आचार्यों का परिचय, ज्योतिषशास्त्र का विकासक्रम, आर्यभट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, श्रीपति, भास्कर, कमलाकर, सामन्तचन्द्र शेखर आदि का परिचय।

इकाई-2.3 ज्योतिषशास्त्रीय प्रमुख कृतियां, सूर्यसिद्धान्त, पंचसिद्धान्तिका, बृहत्संहिता, सिद्धान्तशिरोमणि, बृहज्जातक आदि का परिचय ।

इकाई-2.4 अयन, गोल, पक्ष, ऋतु, मासादि का परिचय।

खण्ड-3 ज्योतिष का सामान्य परिचय कराना

इकाई-3.1 पंचांग परिचय -- तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण,

इकाई-3.2 कालमान विचार- नवविध कालमान, 1. ब्राह्ममान, 2. दिव्यमान, 3. पित्र्यमान, 4. प्राजापत्यमान, 5. गौरवमान, 6. सौरमान, 7. सावनमान, 8. चान्द्रमान, 9. नाक्षत्रमान, नवविध कालमान का परिचय।

इकाई-3.3 राशि परिचय- राशि स्वरूप, राशि स्वामी, राशि स्वभाव, राशि वर्ण, राशि स्थान। शक संवत् विचार, कालपुरूष विवेचन।

इकाई-3.4 ग्रह परिचय- ग्रह स्वरूप, उच्च नीच विचार, मूलत्रिकोण, आत्मादि विचार, राजादि विचार, ग्रहबलविचार एवं मैत्री विचार, षड्बलविचार नैसर्गिक एवं तात्कालिक मित्रामित्र विचार पंचधा मैत्री विचार, मित्र, सम, शत्रु आदि का विचार ।

खण्ड-4 कुण्डली का सामान्य परिचय कराना

CREDIT: -04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

इकाई–4.1 कुण्डली परिचय– कुण्डली का सामान्य परिचय द्वादश भाव विचार।

इकाई–4.2 भावकारक ग्रह विचार,भावों की केन्द्रादि संज्ञा विचार विविध भावों से विचारणीय विषय ग्रहों से विचारणीय विषय।

इकाई–4.3 वर्ग परिचय षडवर्ग, सप्तवर्ग, दशवर्ग, षोडशवर्ग का सामान्य परिचय।

इकाई–4.4 दशा परिचय विंशोत्तरी दशा अष्टोत्तरी दशा, योगिनी दशा ।

परिणाम– 1. मीमांसा दर्शन के दार्शनिकों का परिचय ।

2. मीमांसा दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का परिचय ।

3. ज्योतिष का सामान्य परिचय ।

4. कुण्डली निर्माण इत्यादि का बोध।

निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ– मीमांसा दर्शन आचार्य उदयवीर शास्त्री प्रकाशकर विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली मुहर्त्तचिंतामणि, भारतीय ज्योतिष, भारतीय कुंडली विज्ञान, लघुजातमकम्, जातकालंकार, जातकपारिजात, ताजिकनीकठी, षट्पंचाशिका, जातकतत्वम्, सूर्यसिद्धान्त।

BDPHMJ-602

CREDIT: -04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

भारतीय दर्शनों की मीमांसा एवं इतिहास

खण्ड–1 प्रथम अध्याय–

इकाई–1.1 दर्शन शब्द का अर्थ एवं उपयोगिता
इकाई–1.2 भारतीय दर्शन की कतिपय विशेषताएं एवं लक्ष्य
इकाई–1.3 भारतीय दर्शनों का श्रेणीविभाग एवं कालविभाग
इकाई–1.4 योगदर्शन का इतिहास एवं मीमांसा
इकाई–1.5 योग दर्शन की तत्त्वमीमांसा
इकाई–1.6 योग दर्शन की ज्ञानमीमांसा
इकाई–1.7 योग दर्शन की कर्त्तव्यमीमांसा
इकाई–1.8 सांख्य दर्शन का इतिहास एवं मीमांसा
इकाई–1.9 सांख्य दर्शन की तत्त्वमीमांसा
इकाई–1.10 सांख्य दर्शन की ज्ञानमीमांसा
इकाई–1.11 सांख्य दर्शन की कर्त्तव्यमीमांसा

खण्ड–2 द्वितीय अध्याय–

इकाई–2.1 न्याय दर्शन का इतिहास एवं मीमांसा
इकाई–2.2 न्याय दर्शन की तत्त्वमीमांसा
इकाई–2.3 न्याय दर्शन की ज्ञानमीमांसा
इकाई–2.4 न्याय दर्शन की कर्त्तव्यमीमांसा
इकाई–2.5 वैशेषिक दर्शन का इतिहास एवं मीमांसा
इकाई–2.6 वैशेषिक दर्शन की तत्त्वमीमांसा
इकाई–2.7 वैशेषिक दर्शन की ज्ञानमीमांसा
इकाई–2.8 वैशेषिक दर्शन की कर्त्तव्यमीमांसा

खण्ड–3 तृतीय अध्याय–

इकाई–3.1 वेदान्त दर्शन की तत्त्वमीमांसा
इकाई–3.2 वेदान्त दर्शन की ज्ञानमीमांसा
इकाई–3.3 वेदान्त दर्शन की कर्त्तव्यमीमांसा
इकाई–3.4 मीमांसा दर्शन का इतिहास एवं मीमांसा
इकाई–3.5 मीमांसा दर्शन की तत्त्वमीमांसा
इकाई–3.6 मीमांसा दर्शन की ज्ञानमीमांसा
इकाई–3.7 मीमांसा दर्शन की कर्त्तव्यमीमांसा

खण्ड–4 चतुर्थ अध्याय–

इकाई–4.1 अन्य भारतीय दर्शनों का इतिहास एवं मीमांसा

इकाई–4.2 उपसंहार

BDPHMJ-603 - सांख्यकारिका

CREDIT: -04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

उद्देश्यः- 1. सांख्यकारिका के मूल कारिकाओं के वाचन का बोध कराना।

2. सांख्यकारिका के लेखन का बोध कराना।

3. सांख्यकारिका के अर्थो का ज्ञान कराना।

4. सांख्य की मौलिक सिद्धान्तों का बोध कराना।

खण्ड- 1 सांख्यतत्वविचार

इकाई-1.1 दुःखत्रयविवेचन

इकाई-1.2 तत्त्वों का परिचय

इकाई-1.3 त्रिविध प्रमाण वर्णन

इकाई-1.4 सत्कार्यवाद की स्थापना

खण्ड- 2 प्रकृतिपुरुष स्वरूपविवेचन

इकाई-2.1 प्रकृति पुरुष सम्बन्ध

इकाई-2.2 गुणों का स्वरूप निरूपण

इकाई-2.3 पुरुष की कैवल्यता

इकाई-2.4 विद्यमान पदार्थो की अनुपलब्धता

खण्ड- 3 तत्त्वोत्पत्तिक्रम एवं बुद्धि सर्ग निरूपण

इकाई-3.1 महतत्त्वादि विचार

इकाई-3.2 इन्द्रियविचार

इकाई-3.3 प्रत्यय सर्ग विवरण

इकाई-3.4 शरीर निरूपण

खण्ड- 4 बन्धमोक्षनिरूपण एवं कैवल्यप्राप्ति

इकाई-4.1 भौतिक सर्ग निरूपण

इकाई-4.2 प्रकृति के बन्ध -मोक्ष मे हेतु

इकाई-4.3 सम्यक ज्ञान से जीवन मुक्ति

इकाई-4.4 सांख्यशास्त्र उपसंहार

परिणाम-

1. सांख्यकारिका के मूल कारिकाओं के वाचन में समर्थ हो जाता है।
2. सांख्यकारिका के मूल कारिकाओं के लेखन में छात्र कुशल बन जाता है।
3. सांख्यकारिका के अर्थो से पूर्ण परिचय हो जाता है।
4. सांख्य के मौखिक सिद्धान्तों से पूर्णरूपेण परिचित हो जाता है।

सन्दर्भग्रन्थ :- सांख्यकारिका (श्रीमदीश्वरकृष्णविरचिता)

BDPHMN-604

बुद्धचरितम्

उद्देश्य-

- विद्यार्थियों को बुद्धचरितम् के परिचय के साथ इस के विषय में ज्ञान प्रदान कराना।
- विद्यार्थियों को बुद्धचरितम् में सन्निहित अध्यात्मविद्या तथा सांसारिक व्यवहार की दिव्यता का बोध कराना।
- विद्यार्थियों को बुद्धचरितम् में सन्निहित ईश्वर जीव प्रकृति के सच्चे स्वरूप से अवगत कराना।

खण्ड-1

इकाई-1.1 बुद्धिचरितम् ग्रन्थ परिचय

इकाई-1.2 अराड दर्शन

इकाई-1.3 मार की पराजय

इकाई-1.4 बुद्धत्व प्राप्ति

इकाई-2

इकाई-2.1 धर्मचक्र प्रवर्तन

इकाई-2.2 अष्टांगिक मार्ग

इकाई-2.3 धर्मोपदेश

इकाई-2.4 राजा बिम्बसार को धर्मोपदेश, धर्म दीक्षा

इकाई-3

इकाई-3.1 आत्मवाद का खण्डन (अनात्मवाद)

इकाई-3.2 वेणुवन प्रसंग (महाशिष्यों की प्रव्रज्या)

इकाई-3.3 जेतवन वर्णन

इकाई-3.4 निर्वाण पथ

इकाई-4

इकाई-4.1 धर्म प्रचार

इकाई-4.2 पापापुर कुशीनगर गमन,

इकाई-4.3 मल्लों को उपदेश

इकाई–4.4 निर्वाण प्रशंसा एवं महाकश्यप द्वारा तथागत दर्शन

CREDIT: -04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

परिणाम–

- गौतमबुद्ध के चरित्र के अध्ययन से छात्र बुद्ध के धार्मिक सद्गुणों को आत्मसात करने को उन्मुख होता है।
- बुद्ध के ज्ञानमय एवं शान्तिमय उपदेशों से वैयक्तिम, पारिवारिक व सामाजिक शांतिमय जीवन जीने को बल मिलता है।

सहायक ग्रन्थ– बुद्धचरितम्, स्वामी द्वारकादास शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी।

BDPHMN- 605

लघु शोध प्रबन्ध

उददे्श्य-

1. स्नातक स्तर पर अनुसंधान के अर्थ, आशय एवं आवश्यकता के बारे में जानकारी प्रदान करना

2. अनुसंधान की पद्धति एवं प्रक्रिया के बारे में अवगत कराना।

3. अनुसंधान के लाभ और महत्व के बारे में जानकारी प्रदान करना।

खण्ड-1 शोध का अर्थ, परिभाषा एवं परिचय

इकाई-1.1 अनुसंधान का स्वरूप, शोध का तात्पर्य एवं परिभाषा

इकाई-1.2 शोध के प्रकार - शुद्ध शोध, व्यवहारपरक शोध

इकाई-1.3 शुद्ध शोध, व्यवहारपरक शोध में समानतायें एवं अंतर

इकाई-1.4 शोध के उद्देश्य, व्यवहारपरक शोध या मनोवैज्ञानिक शोध का क्षेत्र

खण्ड-2 वैज्ञानिक ज्ञान और वैज्ञानिक विधि

इकाई-2.1 वैज्ञानिक ज्ञान का स्वरूप या विशेषतायें

इकाई-2.2 साधारण ज्ञान (सामान्य बोध) तथा वैज्ञानिक ज्ञान में अंतर

इकाई-2.3 ज्ञान-अर्जन की विधियाँ - निगमन विधि, आगमन विधि

इकाई-2.4 तथ्य, परिकल्पना, सिद्धांत और नियम

खण्ड-3 शोध विधि और इसकी विशेषतायें

इकाई-3.1 वैज्ञानिक ज्ञान का स्वरूप

इकाई-3.2 वैज्ञानिक विधि के आवश्यक तत्व

इकाई-3.3 शोध समस्या, शोध समस्या निर्धारण के स्रोत

इकाई-3.4 शोध समस्या के प्रकार

खण्ड–4 शोध - प्रक्रिया, शोध प्रक्रिया में निहित अवस्थायें या चरण

इकाई–4.1 शोध समस्या, परिचय, साहित्य समीक्षा, परिकल्पना

इकाई–4.2 अध्ययन–विधि, पायलट अध्ययन, परीक्षण संचालन और प्रदत्त संग्रह

इकाई–4.3 परिणाम एवं विवेचन

इकाई–4.4 सन्दर्भ ग्रंथ सूची, शोध की रिपोर्ट तैयार करना

परिणाम–

1. विद्यार्थियों को अनुसंधाान के बारे में तथ्यात्मक जानकारी प्राप्त हो सकेगी।
2. अनुसंधान के विषय में पद्धति और प्रक्रिया को उचित रूप समझ सकेंगे।
3. अनुसंधान के लाभ महत्व एवं उपयोगिता के बारे में जानकारी प्राप्त होगी।